सर्वहारा दृष्टिकोण

सोशलिस्ट यूनिटी सेन्टर ऑफ इण्डिया (कम्युनिस्ट) का मुखपत्र (पाक्षिक)

वर्ष-32 अंक-18 22 सितम्बर से 6 अक्तूबर, 2017 मुख्य संपादक कॉमरेड प्रभास घोष कुल पृष्ठ 8 मूल्य : 2 रुपये

हत्यारों की ढाल बनी भाजपा–नीत राजस्थान सरकार की एसयूसीआई(सी) ने की कड़ी निंदा

विरोध में उठ खड़े होने का किया पुरजोर आह्वान

एसयूसीआई (सी) के महासचिव कॉमरेड प्रभास घोष ने 15 सितम्बर को निम्नलिखित बयान जारी किया :

निर्दोष नागरिकों की भयावह हत्याओं को मुस्तैदी के साथ उकसाने वाले तथाकथित गौ-रक्षक आरएसएस-बीजेपी के द्वारा बचाये जा रहे हैं – यह अलवर में 1 अप्रैल को मारे गए एक निर्दोष नागरिक, पहलू खान के हत्यारों को बचाने के लिए भाजपा की अगुवाई वाली राजस्थान सरकार के नवीनतम कदम से एक बार फिर नग्न रूप से उजागर हुआ है। 'अवैध रूप से' गायों को ले जाने के आरोप में पीड़ित पहलू खान पर कथित तौर पर घोर हिंदू सांप्रदायिक आरएसएस-बजरंग दल से जुड़े छह शरारती तत्वों द्वारा हमला किया गया था और एक सेल फोन वीडियो फुटेज है जिसमें साफ दिखाई देता हैं कि उसे गर्दन से कस कर कैसे झटके से खींचा गया, जमीन पर पटका गया और निर्दयता से उन गुंडों द्वारा लात मारी गई। अपने मरने वाले घोषणापत्र में पीड़ित व्यक्ति द्वारा हत्यारों को नामित किया गया था। फिर भी, सीआईडी पुलिस ने अपनी जांच रिपोर्ट में कहा कि अपराधी मौके पर मौजूद नहीं थे और उन्हें मुक्त कर दिया गया। जांच और न्याय का इससे बेहूदा मजाक और क्या हो सकता है, महज सांप्रदायिक नफरत की वजह से निर्दोष लोगों को, विशेषकर मुस्लिमों और दलितों को इतनी बेरहमी से पीट-पीट कर मार देने का लाइसेंस प्राप्त स्वयंभू गौ-रक्षकों के खिलाफ प्रधान मंत्री व अन्य मंत्रियों और भाजपा के नेताओं की कटु आलोचनाओं का खोखलापन साफ जाहिर कर दिया है।

हम राजस्थान की बीजेपी सरकार के इस घोर हिंदूपरस्त सांप्रदायिक कदम और कसूरवार हत्यारों को परिरक्षित करने में उसकी बेहया मिलिभगत की पुरजोर निन्दा करते हैं। प्रतिवाद में उठ खड़े होने के लिए हम सभी सही सोच रखने वाले और लोकतांत्रिक विचारधारा वाले लोगों का आह्वान करते हैं ताकि भाजपा सरकार को अपराधियों की रक्षा के रास्ते से पीछे हटने और इस बर्बर हत्या के दोषियों को सख्त से सख्त सजा दिलाने के लिए मजबूर किया सके।

कार्ल मार्क्स

—महान दार्शनिक एवं विश्व कम्युनिस्ट आन्दोलन के पथ प्रदर्शक

(महान कार्ल मार्क्स की 200वीं जयंती के अवसर पर 7 मई 2017 को कोलकाता के यूनिवर्सिटी इंस्टिट्यूट हाल में एस.यू.सी.आई(सी) की पश्चिम बंगाल राज्य कमेटी द्वारा एक समारोह आयोजित किया गया। महान मार्क्स को श्रद्धांजलि देते हुए, एस.यू.सी.आई.(सी) के महासचिव कॉ. प्रभास घोष ने इस सभा में एक वक्तव्य बंगाली में रखा था, बाद में उन्होंने अपने वक्तव्य में कुछ और तथ्यों को जोड़ा। यह भाषण पार्टी के अंग्रेजी मुखपत्र 'प्रालिटेरियन एरा' के वोल्यूम 51 अंक 2 दिनांक 1 सितम्बर 2017 में प्रकाशित हुआ है। इसका हिन्दी रूपांतर यहाँ प्रस्तुत किया जा रहा है। अनुवाद में रह गई कमी-खामी या अभिव्यक्ति में त्रुटि के लिए पूर्णतः जिम्मेदार हम होंगे –सम्पादक, स. दृ.)

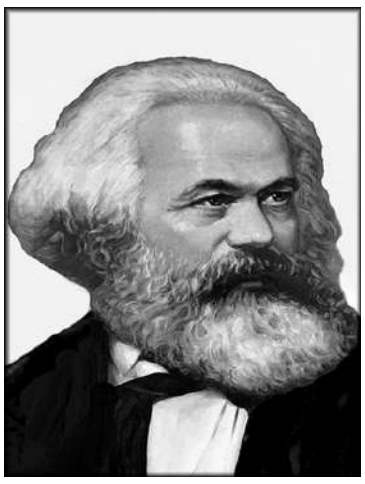

हम आज यहाँ विश्व कम्युनिस्ट आन्दोलन के पथ प्रदर्शक तथा मानव सभ्यता द्वारा सृजित एक विलक्षण एवं आश्चर्यजनक प्रतिभा के धनी महान कार्ल-मार्क्स को श्रद्धांजलि देने के लिए एकत्रित हुए हैं। वे एक चिन्तक थे, उनकी सोच ने पूरी दुनिया को झकझोर कर रख दिया था। आज तक इतिहास में ऐसा कभी देखा नहीं गया था। जहाँ उनके विचारों ने शोषकों की रातों की नींद उड़ा दी थी, वहीं साथ ही असंख्य शोषित-पीड़ित लोगों में आशा और उम्मीद जगा दी थी और उन्हें मुक्ति की राह दिखाई थी। उन्हीं के विचार के आधार पर रूस में ऐतिहासिक महान नवम्बर क्रान्ति सफल हुई थी। फिर चीन में जनगणतांत्रिक क्रान्ति सम्पन्न हुई थी। पूरा पूर्वी यूरोप समाजवादी बन गया था। उत्तर कोरिया, क्यूबा एवं वियतनाम में क्रान्तियाँ हुई थी। लाल फौज ने दूसरे विश्व युद्ध में फासिस्ट ताकतों को जो करारी शिकस्त दी थी, वह भी उन्हीं विचारों और शिक्षाओं से मार्गदर्शित थी। जिन कम्युनिस्टों ने उस समय विभिन्न यूरोपीय देशों में फासिस्टों के खिलाफ प्रतिरोध की

(शेष पृष्ठ 2 पर)

वर्गीय, जन व सामाजिक आन्दोलनों के राष्ट्रीय कन्वेंशन का एलान

30 अक्तूबर को देश भर में मशाल जलाओ अभियान

नई दिल्ली : वर्गीय जन व सामाजिक आंदोलनों का राष्ट्रीय कन्वेंशन 18 सितंबर 2017 को मावलंकर हाल, नई दिल्ली में आयोजित किया गया। सम्मेलन में देशभर के मजदूरों, किसानों, महिलाओं, छात्रों और नौजवानों के जनसंगठनों ने हिस्सा लिया।

सम्मेलन के संचालन के लिए जन संगठनों के प्रतिनिधियों को लेकर एक अध्यक्षमंडल गठित किया गया जिसमें एआईयूटीयूसी का प्रतिनिधित्व कॉमरेड रमेश शर्मा ने किया। सम्मेलन का प्रस्ताव कॉ. हन्नान मोल्ला द्वारा रखा गया। चार्टर ऑफ डिमांड कॉ. अतुल अंजान द्वारा रखा गया। ऑल इण्डिया किसान खेतमजदूर संगठन (एआईकेकेएमएस) की ओर से कॉ. अरुण सिंह ने प्रस्ताव के समर्थन में अपना वक्तव्य रखा जो अलग से दिया जा रहा है। एआईयूटीयूसी के सचिवमंडल सदस्य कॉ. रमेश शर्मा और एआईडीएसओ की ओर से संगठन के अखिल भारतीय उपाध्यक्ष कॉ. मुकेश सेमवाल ने प्रस्ताव के समर्थन में अपनी बात रखी।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

नई दिल्ली : मावलंकर हाल में आयोजित राष्ट्रीय कन्वेंशन को संबोधित करते हुए कॉ. अरुण कुमार सिंह

कार्ल मार्क्स

(पृष्ठ 1 का शेष)

मुहिम चलाई थी, उनकी प्रेरणा का स्रोत भी महान मार्क्स की शिक्षाएं ही थी। मार्क्स के विचारों ने एशिया, अफ्रीका और लेटिन अमेरिका के राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम को भी प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप में प्रभावित किया था। उनके विचारों से प्रेरित होकर लाखों क्रान्तिकारियों ने विभिन्न देशों में आजादी आन्दोलन में भाग लिया था और शहादत को गले लगाया था। बेहद उत्कृष्ट ज्ञान का खजाना जो उन्होंने मानवता को दिया है वह आज बहुत ही ज्यादा प्रासंगिक है और भविष्य में भी यह बहुत लम्बे अर्से तक इसी तरह प्रासंगिक बना रहेगा। मेरे लिए अपनी तमाम सीमाबद्धता के साथ यह बहुत मुश्किल है कि उनकी शिक्षाओं के विभिन्न पहलुओं पर एक निश्चित समयसीमा में चर्चा कर सकूँ। फिर भी मैं कॉमरेड शिवदास घोष की शिक्षाओं के आलोक में कुछ जरूरी बिन्दुओं पर चर्चा करने की कोशिश करूँगा। यदि संभव हुआ तो मैं महान मार्क्स की कृतियों में से कुछ चुनिन्दा अंश पढ़ कर भी सुनाना चाहूँगा।

एक प्रचलित धारणा है कि दर्शन हमारे दैनिक जीवन में प्रयुक्त नहीं होता है। मानो दर्शन की बात करना, 'द कॉबलर शुड स्टिक टू हिज़ लास्ट' (जिसका काम उसी को साजे, दूसरा करे तो मूर्ख बाजे) मुहावरे जैसा है। किन्तु मार्क्सवाद ने दिखाया कि यह सच नहीं है। हर आदमी सोचता है और उसकी चिन्तन प्रणाली, न्यायबोध, सत्य-असत्य की अवधारणाओं, जीवन शैली मूल्यबोधों, नीति-नैतिकता और कर्त्तव्यबोधों पर किसी न किसी दर्शन का प्रभाव काम करता है। हालांकि ज्यादातर मामलों में यह अचेतन रूप में काम करता है। ज्यादातर लोग इस प्रभाव के बारे में सचेत नहीं होते हैं।

दर्शन की दो धाराएं

दर्शन मुख्य रूप से दो धाराओं में विभाजित है–भाववादी तथा वस्तुवादी। यहाँ हमारे देश में यह प्रचार किया जाता रहा है कि प्राचीन भारत का चिन्तन व दर्शन भाववादी प्रकृति का रहा है। उनके अनुसार भारतीय दर्शन में अध्यात्मवाद का खास रुझान पाया जाता है। किन्तु न तो सम्पूर्ण मानव समाज के इतिहास के और न ही भारत के संदर्भ में यह सही है। यह कहना अत्यावश्यक है कि अन्तिम विश्लेषण में भाववाद यानी प्रकृति से परे या अतिप्राकृत शक्ति या अलौकिक सत्ता में विश्वास या मान्यता देने पर आधारित है और यह सामाजिक विकास के एक खास स्तर पर ही समाज में अवतरित हुआ। जब स्थाई सम्पत्ति निर्मित हुई एवं समाज दो वर्गों में विभाजित हो गया, तब ईश्वर की अवधारणा का जन्म हुआ। पूर्ववर्ती चर्चाओं में कई बार हमने दिखाया है कि प्राचीन भारतीय दर्शन या तो वस्तुवादी था या सिर्फ प्रकृति को मानने पर आधारित था। आज भी अंदमान तथा अफ्रीका के आदिवासियों के बीच ईश्वर या ऐसी किसी अलौकिक सत्ता का वहाँ कोई सोच नहीं है। विवेकानन्द ने स्वयं कहा था, विश्व-ब्रह्माण्ड के प्रकृत सत्यों की ''खोज पहले बहिर्जगत में ही शुरू हुई। मनुष्यों ने पहले पहल दुरूह समस्याओं के उत्तर बाह्य प्रकृति-जगत से पाने की चेष्टा की।''[1] इस संदर्भ में उन्होंने सच ही कहा था। हमारे देश के शैक्षणिक पाठ्यक्रम में चार्वाक का दर्शन या लोकायत दर्शन शामिल है। ये दर्शन इतिहास में वस्तुवादी दर्शन माने जाते हैं। कणाद ऋषि ने कहा था कि संपूर्ण भौतिक जगत छोटे-छोटे कणों से बना है। यह विश्वास किया जाता था कि यह भौतिक जगत पंचभूत अथवा पाँच मौलिक तत्वों–पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि एवं आकाश से निर्मित है और एक दिन उन्हीं पंच तत्वों में विलीन हो जाएगा। प्राचीन यूनान तथा अन्य देशों में वस्तुवादी चिन्तन प्रचलित था। प्रारम्भ में लोग वस्तुवादी तरीके से सोचते थे। शून्य की धारणा भारत में खोजी गई। शून्य का मतलब 'कुछ नहीं है' नहीं होता। शून्य भी एक अंक है। एक पूर्णांक है जिसका निश्चित गणितीय मतलब है। इस प्रकार के उच्च चिन्तन प्राचीन भारत में प्रचलित थे। पूर्ववर्ती समय से ही यह धारणा चली आ रही है कि दर्शन वस्तुवादी है। दर्शन का मतलब ही है, जो हम देखते हैं वही वास्तविकता है।

मार्क्स ने दिखाया कि धर्म है उत्पीड़ित जन की आह

आदिकाल के मानव में प्रकृति या वस्तुजगत से बाहर कोई अतिप्राकृतिक सत्ता की अवधारणा नहीं थी। महान मार्क्स ने कहा था, ''धर्म उत्पीड़ित जन की आह है, एक हृदयहीन दुनिया का वह हृदय है, उसी तरह जिस तरह आत्माहीन स्थिति की वह आत्मा है.. .धार्मिक पीड़ा साथ ही वास्तविक पीड़ा की अभिव्यक्ति है और वास्तविक पीड़ा के खिलाफ विरोध प्रदर्शन भी है।''[2] मार्क्स के क्रान्तिकारी सहयोद्धा एंगेल्स ने ईसाई धर्म की व्याख्या करते हुए कहा था कि ''ईसाई धर्म और मजदूरों का समाजवाद दोनों ही गुलामी की बेड़ियों और दुख-दर्दों से आसन्न मुक्ति का संदेश देते हैं। ईसाई धर्म कहता है यह मुक्ति अगले जीवन में, मृत्यु उपरांत, स्वर्ग में प्राप्त होगी। समाजवाद कहता है कि वह इसी दुनिया में, समाज को बदल कर मिलेगी।''[3] उनके योग्य शिष्य कॉ. शिवदास घोष ने दिखाया कि दास-प्रभु समाज में जब वर्ग विभाजन हो गया तथा दास-प्रभु समाज को एक तरीके से संचालित करने लगे, तब लोगों को लगा कि इसी तरह ब्रह्माण्ड को चलाने वाला कोई होगा जो इस दुनिया में एक निश्चित अवधि में सूर्य उगाना एवं डूबना, ऋतुओं का बदलना, ज्वार-भाटा, जन्म-मृत्यु सब कुछ व्यवस्थित तरीके से संचालन व निर्देशन कर रहा है। इस प्रकार से दो भिन्न-भिन्न परिघटनाओं के बीच सादृश्य स्थापित कर तथा समरूपता बनाने की प्रक्रिया से लोगों के ज़ेहन में ईश्वर की अवधारणा पैदा हुई और यह ईश्वर शोषित-पीड़ित दासों के आंसुओं से पैदा हुआ था। उस समय के महापुरुषों ने दासों की मुक्ति के बारे में सोचा था। जो कुछ भी विचार इस मामले में उनके मस्तिष्क में आया था और जो कुछ भी वे मुक्ति के रास्ते के तौर पर सोच सके थे, उसे उन्होंने ईमानदारी से ईश्वर की वाणी समझा था। इस ईश्वर की वाणी का प्रचार करते हुए बहुत सारे धर्म प्रचारकों को उस समय दास-प्रभुओं का कोप भाजन होना पड़ा था और सजा भुगतनी पड़ी थी। उनमें से कुछ को यहाँ तक कि मौत की सजा भी दी गई थी। कॉमरेड शिवदास घोष ने इन सबको विस्तृत रूप में समझाया है। आप सभी जानते हैं कि बाद में सामन्तवाद में यही धर्म राजाओं और सामंतों के हाथ में शोषण का औजार बन गया। मैं उन सब विषयों में नहीं जा रहा हूँ। मैं केवल यह बताना चाहूँगा कि बुर्जुआ चिन्तनकारों ने नहीं, बल्कि केवल मार्क्सवादी चिन्तनकारों ने ही धर्म की उस प्रगतिशील भूमिका की सही-सही व्याख्या की थी जो धर्म ने इतिहास के एक खास समय में अदा की थी। बुर्जुआ चिन्तनकार जैसे बेकन, लॉक, हॉब्स, स्पीनोज़ा, ह्यूम, काण्ट तथा फुअरबाख सभी ने धर्म को इतिहास का विपथन करार दिया था। किन्तु आज धर्म बुर्जुआ के हाथों लोगों को धोखा देने के लिए अंतिम सहारा है।

भाववादी एवं वस्तुवादी विचारधाराओं के बीच टकराव

ईश्वर का विचार आ जाने से भाववादी दर्शन पैदा होने के साथ ही भाववादी और वस्तुवादी दर्शनों के बीच द्वन्द्व-टकराव शुरू हो गया था। भाववादियों के एक धड़े की दलील थी कि ईश्वर या अलौकिक सत्ता ने वस्तुजगत, पदार्थ, जीवन एवं मानव की सृष्टि की है। प्रत्येक चीज ईश्वर की मर्जी से संचालित हो रही है। दूसरा धड़ा कहता है कि प्रकृति तथा अलौकिक सत्ता दोनों का ही अस्तित्व है और दोनों शुरूआत से ही हैं। तीसरा धड़ा यह दावा करता है कि अलौकिक सत्ता या 'परम भाव' (एब्सोल्यूट आइडिया) ही केवल सत्य है और वस्तुजगत या प्रकृति कुछ नहीं है बल्कि उस 'परम भाव' की ही अभिव्यक्ति मात्र है। वे सभी एक बिन्दु पर एकमत हैं कि 'परम भाव' या अलौकिक शक्ति या सत्ता वस्तु से परे है। दूसरी तरफ वस्तुवादी मानते थे कि पदार्थ ही एकमात्र वास्तविकता है। वे वस्तुजगत से परे किसी शक्ति के अस्तित्व को मान्यता नहीं देते थे। किन्तु अतीत काल में विज्ञान उतना विकसित नहीं था। इसलिए ज्ञान की एक सीमा वहाँ थी। यही कारण है कि वस्तुवादी उस समय मस्तिष्क या विचार क्या है –इसकी कोई तर्कसंगत व्याख्या नहीं दे सके। यह भाववादियों के लिए फायदेमंद साबित हुआ। इसी आधार पर भाववाद ने समाज में गहरी जड़ जमा ली हैं। इस पहलू के बारे में मुझे चर्चा करनी है क्योंकि आम लोग अब भी इस तरह के भाववादी विचारों के प्रभाव में रह रहे हैं कि 'भगवान की मर्जी के बिना पत्ता भी नहीं हिलता', 'जाको राखे साईंया, मार सके न कोये', 'भाग्य में लिखे को कोई नहीं बदल सकता', 'जो किस्मत में है वही सब होता है', 'बंदा जोड़े पली-पली, राम लुढ़ाये कुप्पा', 'सभी विचार ईश्वरीय चिन्तन हैं' वगैरह, वगैरह। यहाँ तक कि कोई-कोई आस्तिक डॉक्टर कहता है, ''मरीज का इलाज करने के लिए मैंने तो जितना एक इन्सान के हाथ में है, उतना सब किया, अब आप यह समझ ही सकते हैं कि सब कुछ सर्वशक्तिमान ईश्वर के हाथ में है।'' यह सोचने के एक खास रुझान को पेश करता है। कोई बाहरी ताकत, वस्तुजगत तथा प्रकृति से बाहर एक सुपर मस्तिष्क तमाम चीजों को नियंत्रित कर रहा है। यह भाववादी चिन्तन है।

भाववाद के अनुसार सब कुछ है पहले से तय और वह है शाश्वत

तब यह वस्तुजगत क्या है? क्या इसमें कोई परिवर्तन हो रहा है? क्या समाज बदल रहा है? अगर हाँ तो क्या उस परिवर्तन में वहाँ कोई नियम काम कर रहा है? क्या यह नियम जाना जा सकता है? इस प्रकार के प्रश्न दर्शन से जुड़े हुए हैं। भाववादियों या आस्तिकों का विश्वास है कि वस्तुजगत से परे एक अतिप्राकृतिक शक्ति है। भाववाद के दर्शन में कोई राम या कृष्ण नहीं है। भारतीय भाववाद का मानना है कि ब्रह्म, एक खास अलौकिक शक्ति या 'परम' भाव काम कर रहा है। मार्क्स से पहले हेगेल ने कहा था कि परम भाव, शाश्वत विचार अनादिकाल से अस्तित्वमान है। यह दुनिया उसी ''परम भाव'', एक ''सर्वव्यापी भावना'', ''चेतना'' की अभिव्यक्ति है। इस ''परम भाव'' के अंतर्गत ही द्वन्द्वात्मक प्रक्रिया के माध्यम से विभिन्न परिवर्तन हो रहे हैं। उन परिवर्तनों की प्रक्रिया में वस्तुजगत और समाज का आविर्भाव अन्यसंक्रामण/परकीयकरण (alienation) के जरिये हुआ है। प्रकृति या समाज में जो भी परिवर्तन हम देखते हैं, वे समय के आयाम में कुछ भी नहीं हैं; वस्तुगत वास्तविकता या मानव समाज उसी ''परम भाव'' की ही द्वन्द्वात्मक अभिव्यक्ति है। तर्कसंगत भाव की विभिन्न अवस्थाओं के तौर पर ये परिवर्तन 'परम भाव' के अन्दर ही निहित हैं और बारम्बार उजागर होते रहते हैं। यह पुनरावृत्ति निरन्तर हो रही है। कुछ भी नया नहीं हो रहा है। हेगेल का चिन्तन जहाँ तक मैंने समझा है, इसी प्रकार का था। अब, एंगेल्स की कही हुई बात को उद्धृत करूँगा जिनसे मैंने यह सब सीखा है। ''हेगेल के कथनानुसार प्रकृति केवल विचार का ''अन्यसंक्रामण/परकीयकरण'' मात्र होने के कारण काल (टाइम) में विकास करने में असमर्थ है –वह केवल दिक् (स्पेश) में ही अपने नाना रूपतत्व का विस्तार कर सकती है, जिस कारण वह अपने में सन्निविष्ट विकास के सभी चरणों को ही समय में और दूसरे के साथ-साथ प्रदर्शित करती है और वह एक जैसी प्रक्रियाओं की शाश्वत पुनरावृत्ति के लिए विवश है।''[3क] (लुडविग फुअरबाख़ और क्लासिकीय जर्मन दर्शन का अन्त) इस प्रश्न पर मार्क्स का हेगेल के साथ मौलिक मतभेद था।

हमारे देश में विवेकानन्द ने अद्वैत वेदांत की व्याख्या करते हुए कहा था कि परम ब्रह्म या महत् ही केवल सत्य है। उनके अनुसार प्राण उर्जा और आकाश पदार्थ है। उन्होंने कहा कि प्राण तथा आकाश ब्रह्म या महत् से सृजित हुआ है। सर्वप्रथम पदार्थ और उर्जा सूक्ष्म से सूक्ष्मतर होते जा रहे हैं। फिर आकाश प्राण के संपर्क में आकर स्थूल से स्थूलतर, विशाल से विशालतर होता जाता है। उसी से सूर्य, चन्द्रमा तथा अन्य नक्षत्र उभर कर आ रहे हैं। फिर दुबारा हर चीज स्थूल से सूक्ष्म होती जा रही है और फिर परम ब्रह्म में विलीन हो जाती है। यह फिर एक वृत्त में वापस आ जाती है और फिर वापस चली जाती है। इस प्रकार सृष्टि एवं विनाश चलता रहता है। इसी प्रकार प्रक्रिया निरन्तर दुहराई जाती है। इसलिए कुछ भी नया पैदा नहीं होता है। हेगेल तथा विवेकानन्द दोनों ने ही 'परम भाव' की

(शेष पृष्ठ 4 पर)

एसयूसीआई(सी) का उ. प्र. राज्य असाधरण सम्मेलन सम्पन्न

जौनपुर: सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए कॉ. रंजीत धर

जौनपुर (उ.प्र.) : सोशलिस्ट यूनिटी सेण्टर आफॅ इण्डिया (कम्युनिस्ट) उत्तर प्रदेश राज्य का दो दिवसीय एक्स्ट्रा ऑर्डिनरी राज्य सम्मेलन स्थानीय कलेक्ट्रेट सभागार में 26-27 अगस्त 2017 को सम्पन्न हुआ। सम्मेलन में जौनपुर, प्रतापगढ़, सुलतानपुर, इलाहाबाद, कानपुर, लखनऊ, बलिया, मुरादाबाद, अमरोहा, कानपुर देहात, मऊ, चन्दौली, वाराणसी जिले से 136 प्रतिनिधियों ने भाग लिया। सम्मेलन की अध्यक्षता पार्टी के राज्य कमेटी के वरीष्ठ सदस्य कॉमरेड जगदीश चन्द्र अस्थाना व संचालन कार्यालय सचिव कॉमरेड जगन्नाथ वर्मा ने किया।

सम्मेलन की शुरूआत पार्टी के वरिष्ठ राज्य कमेटी सदस्य कॉ. जगदीश चन्द्र अस्थाना द्वारा झण्डारोहण से हुई। तत्पश्चात् पोलिट ब्यूरो सदस्य कॉ. रंजीत धर व स्टाफ सदस्य कॉ. अरूण सिंह सहित सचिवमण्डल के सदस्यों द्वारा शहीद वेदी पर माल्यार्पण किया गया। सम्मेलन का प्रथम सत्र कॉमरेड शिवदास घोष पर रचित गान से शुरू हुआ। कॉ. जगदीश चन्द्र अस्थाना ने उद्घाटन भाषण में कहा कि देश में पूँजीवादी व्यवस्था है जो केवल पूँजीपति के हित में ही कार्य कर रही है। तथाकथित वामपंथी पार्टियों की भी ऐसी ही नीतियाँ है जो पूँजीपति वर्ग का हित कर रही हैं। पूँजीवादी व्यवस्था में मेहनतकश वर्ग का हित हो ही नहीं सकता। मेहनतकश को पूँजीवाद-विरोधी समाजवादी क्रांति करनी ही होगी। इसके लिए क्रांतिकारी पार्टी एस.यू.सी.आई. (कम्युनिस्ट) को ताकतवर बनाना होगा।

सम्मेलन को राज्य कमेटी सदस्य कॉ. राजबली, कॉ. धर्मदेव, कॉ. वालेन्द्र कटियार, कॉ. शैलेन्द्र कुमार, कॉ. रामसमुझ मौर्य, कॉ. विजयपाल सिंह, कॉ. जयप्रकाश मौर्य आदि ने भी सम्बोधित किया। पार्टी के स्टाफ सदस्य कॉ. अरूण सिंह ने कहा कि क्रांति दरवाजा खटखटा रही है। क्रांति करने लायक पार्टी की ताकत को बढ़ाना होगा। सम्मेलन के माध्यम से जो राज्य कमेटी बनेगी वह पार्टी के इस आवश्यक कार्य को मजबूती से कर पायेगी। मेरी शुभ कामना है।

कार्यालय सचिव कॉ. जगन्नाथ वर्मा द्वारा सेक्रेटरी रिपोर्ट पेश की गई जिस पर प्रतिनिधियों ने चर्चा की।

सम्मेलन में 32 सदस्यीय राज्य कमेटी का प्रस्ताव पार्टी के स्टाफ सदस्य कॉ. अरूण सिंह ने रखा जिसका सभी प्रतिनिधियों ने सर्वसम्मति से समर्थन किया। नई राज्य कमेटी में प्रदेश सचिव कॉमरेड पुष्पेन्द्र विश्वकर्मा, कार्यालय सचिव कॉमरेड जगन्नाथ वर्मा व कोषाध्यक्ष कॉमरेड रविशंकर मौर्य को सर्वसम्मति से चुना गया। कॉ. पुष्पेन्द्र विश्वकर्मा, कॉ. जगन्नाथ वर्मा, कॉ. रविशंकर मौर्य, कॉ. सपन चटर्जी, कॉ. बेचन अली, कॉ. विजय पाल सिंह को लेकर 6 सदस्यीय सचिवमण्डल का गठन भी किया गया। इसके अलावा कॉ. वी.एन. सिंह, कॉ. जगदीश चन्द्र अस्थाना, कॉ. राजबली, कॉ. सुधांशु कुमार मालवीय, कॉ. हीरालाल मौर्य, कॉ. धर्मदेव, कॉ. वालेन्द्र कटियार, कॉ. जय प्रकाश मौर्य, कॉ. शील कुमार, कॉ. त्रिभुवन नाथ शर्मा, कॉ. शैलेन्द्र कुमार, कॉ. राजेन्द्र सिंह, कॉ. रामआसरे मौर्य, कॉ. रामसमुझ मौर्य, कॉ. मुन्ना शर्मा, कॉ. दिलीप कुमार, कॉ. मिथिलेश मौर्य, कॉ. हरिशंकर, कॉ. झरना मालवीय, कॉ. राजवेन्द्र सिंह, कॉ. जय प्रकाश मौर्य (सुलतानपुर), कॉ. कमलेश सिंह (इलाहाबाद), कॉ. हीरालाल गुप्त, कॉ. कमलेश चहल, कॉ. मधुकर राजपूत, कॉ. हर किशोर सिंह कमेटी सदस्य चुने गये। सम्मेलन के समापन के अवसर पर पार्टी के पोलिट ब्यूरो सदस्य कॉमरेड रंजीत धर ने प्रतिनिधियों को सम्बोधित करते हुए कहा कि वर्तमान सांगठनिक राज्य कमेटी जो चुनी गयी है वह प्रदेश के आम शोषित-पीड़ित सर्वहारा वर्ग के हित में पूँजीवाद-विरोधी समाजवादी क्रांति करने के दायित्व का निर्वाह करने की दिशा में आगे बढ़ेगी। इसके लिए पार्टी सदस्यों व आवेदक सदस्यों सभी को अपना सांस्कृतिक, वैचारिक एवं राजनैतिक स्तर को ऊँचा उठाना होगा। बिना इस संघर्ष को चलाए, इतिहास द्वारा दिये गये उत्तरदायित्व को पूरा नहीं कर पायेंगे। कॉमरेड शिवदास घोष के अधूरे कार्यो को पूरा करना ही वर्तमान राज्य कमेटी का दायित्व होगा।

अंतर्राष्ट्रीय गान के साथ सम्मेलन का समापन हुआ।

शराब की दुकान बंद करने की मांग पर जुलूस

नागपुर (महाराष्ट्र) : एमआईडीसी हिंगना क्षेत्र के राजीवनगर में जनता ने शराबबंदी का बिगुल बजा दिया है। राजीवनगर में शराब के खिलाफ जबरदस्त रोष व्याप्त है। हाल ही में एक बेगुनाह आदमी को बेवजह मौत के घाट उतार दिया गया था। तब से लोगों में लगातार रोष बढ़ रहा है। ऐसे में एक आदमी द्वारा राजीवनगर बस स्टॉप के पास और शमशान भूमि वर्मा वुडन टाल के पास फिर से शराब की दुकान खोल दिये जाने ने जनआक्रोश का भड़काने के लिए आग में घी का काम किया। शराब की दुकान शान्तिनिकेतन स्कूल से करीब 200 मीटर और सरलादेवी स्कूल से करीब 100 मीटर की दूरी पर ही है। इससे स्कूली बच्चों पर भी बुरा असर पड़ रहा है।

ऑल इण्डिया महिला सांस्कतिक संगठन और ऑल इण्डिया डीवाईओ द्वारा 4 सितम्बर को शराबबंदी की मांग पर जुलूस निकाला गया। पुलिस चौकी पर बीट जमादार को ज्ञापन सौंपा गया।

एआईडीवाईओ नागपुर इंचार्ज तथा महाराष्ट्र कार्यालय सचिव कॉ. माधुरी निकुरे ने जुलूस को सम्बोधित किया। जुलूस का नेतृत्व एआईएमएसएस नागपुर सचिव कॉ. नीलम दास और एआईडीवाईओ नागपुर सचिव कॉ. माधुरी निकुरे ने किया।

बिजली बिलों में धांधली का विरोध

ग्वालियर (मध्य प्रदेश) : मध्य क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी द्वारा ग्वालियर शहर की जनता को अगस्त माह के गलत बिजली बिलिंग के खिलाफ सोशलिस्ट यूनिटी सेंटर ऑफ इंडिया (कम्युनिस्ट) द्वारा गत दिनों रोशनी घर पर विरोध प्रदर्शन किया गया। इसमें कई क्षेत्रों से आम लोग शामिल हुए।

एसयूसीआई (सी) के जिला कमेटी सदस्य कॉमरेड रूपेश जैन व कॉमरेड रचना अग्रवाल द्वारा उपस्थित जनता को संबोधित किया गया व महाप्रबंधक के नाम पर ज्ञापन देकर बिजली बिलों में सुधार की मांग की गई। ज्ञापन में कहा गया कि शहर के बिजली उपभोक्ताओं का अगस्त माह का बिल 30 दिन के स्थान पर अगले माह के 15 दिन की यूनिटों को जोड़कर बढ़े हुए स्लैब पर बना कर दिया गया है। आम जनता का एक बड़ा हिस्सा अनपढ़ गरीब तबका है, वह पहले ही बिजली के मनमाने बिलों से परेशान है। ऊपर से बिजली कंपनी द्वारा की गई इस धोखाधड़ी से जनता पर नाजायज बोझ डाल दिया गया है। कंपनी को इसे तुरंत प्रभाव से वापस लेना चाहिए। साथ ही लाइन लॉस, खराब मीटर, कनेक्शन काटे जाने के बाद भी बिल देने और आंकलित बिल देने आदि अन्य समस्याओं को भी रखा गया। मांगें ना मानने की स्थिति में आंदोलन तेज करने की चेतावनी दी गई।

दिल्ली आशा वर्कर्स अनिश्चितकालीन हड़ताल पर

एआईयूटीयूसी से संबद्ध दिल्ली आशा वर्कर्स एसोसिएशन (दावा) के बैनर तले दिल्ली की समस्त आशा वर्कर्स 28 अगस्त से अनिश्चितकालीन हड़ताल पर हैं। उनकी मांगें हैं 'इंसेंटिव नहीं, वेतन दो', 'सरकारी कर्मचारी घोषित करो'। हड़ताल के 21 दिन बाद भी दिल्ली सरकार ने उनकी मांगें नहीं मानी हैं। दावा यूनियन नेताओं का कहना है कि एक सप्ताह पहले ही कर्नाटक सरकार ने आशा वर्करों को 3500 रु. प्रतिमाह और तेलंगाना सरकार ने 4 महीने पहले ही आशा वर्करों को 6000 रु. प्रतिमाह देने की घोषणा की है। लेकिन सबसे अलग सरकार होने का दावा करने वाली दिल्ली सरकार वर्करों की जायज मांगें नहीं मान रही है। यूनियन के अध्यक्ष व एआईयूटीयूसी के प्रदेश सचिव कॉ. मैनेजर चौरसिया ने कहा कि हड़ताल तब तक जारी रहेगी जब तक सरकार आशा वर्कर्स की मांगें मान नहीं लेती। दावा यूनियन के सलाहकार व एआईयूटीयूसी के प्रदेश अध्यक्ष कॉ. हरीश त्यागी ने कहा कि आशा वर्कर की मांगें पूरी तरह जायज हैं। सरकार ने यदि मांगें नहीं मानी, तो आंदोलन और तेज किया जाएगा।

शहीद खुदीराम बोस का शहादत दिवस मनाया

जमशेदपुर (झारखण्ड) : 11 अगस्त को ऑल इंडिया डीएसओ जमशेदपुर नगर कमेटी की ओर से यहां शहीद खुदीराम बोस चौक मानगो में देश के पुष्प शहीद खुदीराम बोस के शहादत दिवस के मौके पर सभा की गई। सर्वप्रथम संगठन के राज्याध्यक्ष पतित पावन कुइला ने शहीद खुदीराम बोस की मूर्ति पर माल्यार्पण किया। तत्पश्चात उपस्थित संगठन के सभी कार्यकर्ताओं ने पुष्पांजलि अर्पित की।

सभा को संगठन के जिला अध्यक्ष प्रवीण कुमार महतो, जिला कमेटी सदस्य डोमन महतो एवं मुख्य वक्ता संगठन के राज्याध्यक्ष पतित पावन ने संबोधित किया। उन्होंने कहा कि आज देश में जहां छात्र-नौजवान अपने व्यक्तिगत कैरियर को लेकर व्यस्त हैं, 'अपना-अपना देखो' और 'अपने बारे में सोचो' की सोच लेकर चल रहे हैं, ऐसे में हमें याद आते हैं आजादी आन्दोलन के महान क्रांतिकारी शहीद खुदीराम बोस जिन्होंने मात्र 17 वर्ष की उम्र में समाज के दबे-कुचले, शोषित-पीड़ित, कमजोर लोगों के साथ खड़े होकर समाज व देश की सेवा के लिए अपनी जान तक निछावर कर दी थी। उनसे हमें प्रेरणा लेकर सामाजिक कामों में आगे आने की जरूरत है।

सभा का संचालन राज्य कमेटी सदस्य सोहन महतो ने किया। कार्यक्रम में शहीद खुदीराम बोस पर रचित गान 'एक बार विदाई दे मां घुरे आसी', 'हिटलरशाही नहीं चलेगी हर सरकार से कह दो' एवं अन्य क्रांतिकारी गीत प्रस्तुत किये गये।

हस्पताल में हुई बच्चों की मौत के खिलाफ विरोध प्रदर्शन

रायपुर (छत्तीसगढ़) : गत 21अगस्त को उ.प्र. में गोरखपुर के सरकारी बीआरडी मेडिकल कॉलेज एवं हस्पताल में ऑक्सीजन सप्लाई बन्द कर देने के कारण तीन दिन में 78 से अधिक बच्चों की मौत के जघन्य अपराध के खिलाफ हमारी पार्टी एसयूसीआई (कम्युनिस्ट) के द्वारा दुर्ग छत्तीसगढ़ में 23 अगस्त को राजेन्द्र पार्क से कलेक्टर ऑफिस तक जोरदार प्रदर्शन कर कलेक्टर को ज्ञापन सौंपा गया।

कार्ल मार्क्स

(पृष्ठ 2 का शेष)

बात भिन्न लहजे में कही, किन्तु अंतर सिर्फ इतना था कि विवेकानन्द ने आकाश एवं प्राण को परम ब्रह्म से पैदा होने की बात कही। यह बात हेगेल के दर्शन में नहीं थी। हेगेल के दर्शन में द्वन्द्वात्मक प्रक्रिया के माध्यम से भाव का परिवर्तन होने की बात मानी गई है। किन्तु यह विवेकानन्द के विचारों में नहीं पाई जाती है। किन्तु दोनों के कथनानुसार सृष्टि एवं विनाश निरन्तर उसी रूप में हो रहे हैं। इसलिए भाववादी दर्शन के अनुसार सभी कुछ शाश्वत है, अपरिवर्तनशील है पहले से तय है। यहाँ किसी को भी नया या बदला हुआ नहीं कहा जाता है।

मार्क्स के बारे में इस चर्चा में यह सवाल प्रासंगिक क्यों है? क्योंकि अगर कोई आदमी भाववाद से चलता है तो इससे भली-भांति यह अर्थ लगाया जाएगा कि पूँजीवाद, अमीर-गरीब का विभाजन या आदमी के द्वारा आदमी का शोषण सब कुछ शाश्वत है, अटल है। गरीब इसलिए गरीब है क्योंकि उसकी किस्मत खराब है। अमीर इसलिए अमीर है क्योंकि उसके पूर्व जन्म में उसने अच्छे कार्य किए थे। इस तरह के विचार जनसाधारण में व्याप्त हैं। ऐन इसी प्रकार के सोचने के ढंग से ही अतिप्राकृतिक शक्ति के अस्तित्व की कल्पना होती है। यांत्रिक भौतिकवादी इन प्रश्नों का कोई जवाब नहीं दे सके। मार्क्स से पहले सामन्तवाद-विरोधी बुर्जुआ जनतांत्रिक क्रान्ति अपने पीछे यांत्रिक भौतिकवादी दर्शन समाज में लायी थी। यांत्रिक भौतिकवाद के कथनानुसार, मनुष्य व उसका मस्तिष्क, सब कुछ मशीन की माफिक है। यांत्रिक भौतिकवाद के पैरोकार इससे परे कुछ सोच भी नहीं सकते थे। इसी समझदारी के चलते वे भी अंततोगत्वा भाववाद के चंगुल में फंसे रह गए। अगर कोई यांत्रिक भौतिकवाद को मानकर चलता है, तो उसे ''प्राइम मूवर'' (आदि चालक) न्यूटनीय अवधारणा की तरह यह मानना होगा कि मनुष्य रूपी मशीन को गति में लाने के लिए किसी ने पहले पहल धक्का दिया होगा। दूसरी तरफ, अज्ञेयवादी दर्शन भी 'कुछ भी जाना नहीं जा सकता है', 'वस्तु निज-रूप' यानी वस्तुएं अपने आप में हैं' इत्यादि जैसी धारणा की बात करता था। दूसरे शब्दों में अज्ञेयवादी विश्वास करते थे कि पदार्थ का रहस्य पदार्थ में ही निहित है और उसे जाना नहीं जा सकता है। इस प्रकार के चिन्तन द्वारा भाववाद से नहीं लड़ा जा सकता था।

यह तो मार्क्स थे जिन्होंने सर्वप्रथम हेगेल से लड़ते हुए भाववाद की जड़ पर प्रहार किया। हेगेल के चिन्तन से उनका कहाँ मौलिक मतभेद था इस बात को बताने के लिए मार्क्स ने कहा था, ''हेगेल के लिए मानव-मस्तिष्क की जीवन-प्रक्रिया, अर्थात् चिन्तन की प्रक्रिया, जिसे ''विचार'' के नाम से उसने एक स्वतंत्र कर्ता तक बना डाला है, वास्तविक संसार की सृजनकर्त्री है और वास्तविक संसार ''विचार'' का बाहरी, इन्द्रियगम्य रूप मात्र है। इसके विपरीत, मेरे लिए विचार इसके सिवा और कुछ नहीं कि भौतिक संसार मानव-मस्तिष्क में प्रतिबिम्बित होता है और चिन्तन के रूप में बदल जाता है।''[3ख] (पूँजी, खण्ड 1, दूसरे जर्मन संस्करण का परिशिष्ट) हेगेल के कथनानुसार 'परम भाव' वस्तुजगत का सृष्टिकर्त्ता है। यह दिखाता है कि हेगेल ने इस वस्तु जगत को 'परम भाव' की अभिव्यक्ति मान लिया था। मार्क्स ने सर्वप्रथम दिखाया कि मानव मस्तिष्क में भौतिक प्रक्रिया के तहत बाहरी दुनिया प्रतिबिम्बित होकर भाव अर्थात् विचार को पैदा कर रही है। इसी को आगे विस्तृत रूप में महान लेनिन तथा फिर कॉमरेड शिवदास घोष ने दिखाया कि यह प्रतिबिम्बन दर्पण में प्रतिबिम्बन जैसा नहीं है। यह प्रतिबिम्बन मानव मस्तिष्क तथा भौतिक दुनिया के बीच द्वन्द्व की प्रक्रिया के माध्यम से होता है। कॉमरेड शिवदास घोष ने एक जगह बताया था कि जहाँ हमारे चिन्तन की सामग्री भौतिक दुनिया में निहित है, वहीं दृष्टिकोण के साथ-साथ हमारे चिन्तन की प्रक्रिया भी जाने-अनजाने हम समाज से ही लेते है। यही कारण है कि यद्यपि दो लोग समान वस्तुगत परिस्थिति में वास करते है, लेकिन उनके सोचने की प्रक्रिया अलग हो जाती है और इस तरह उनके मत या निष्कर्ष भी भिन्न हो जाते हैं। यह भी ध्यान रखना होगा कि मार्क्स के समय विज्ञान उतना विकसित नहीं था जितना कि आज है। मानव मस्तिष्क संरचना के क्षेत्र में बहुत सारी खोजें उस समय तक नहीं हुई थीं। पावलोव और दूसरे वैज्ञानिकों के आविष्कार भी उस जमाने में नहीं हुए थे। उस पृष्ठभूमि में मार्क्स का चिन्तन व भाव की उत्पत्ति का अन्वेषण ऐतिहासिक एवं शानदार था।

मार्क्स ने सर्वप्रथम सत्य को जानने के लिए विज्ञान को औजार के रूप में किया इस्तेमाल

मार्क्स से पूर्व काल के दार्शनिकों ने भी अपने समय में काफी योगदान दिया था। किन्तु जितना भी महान वे क्यों न हों, इतिहास की सीमाबद्धता से वे ग्रसित थे। सामाजिक काल खण्ड में उन सभी ने अपनी-अपनी चिन्तन प्रक्रिया के आधार पर सत्य के बारे में अपनी-अपनी समझदारी अभिव्यक्त की थी। मार्क्सवाद के आधार पर हम जानते हैं कि इतिहास के किसी भी मोड़ पर किसी भी चिन्तन, दर्शन की उत्पत्ति का आधार तत्कालीन वस्तुगत परिस्थिति में निहित होता है, यद्यपि उस समय के दार्शनिक इस बात से वाकिफ नहीं थे। मार्क्सवादी पद्धत्ति उस समय नहीं आई थी। इसलिए उस समय के दार्शनिकों का अनुभव विज्ञान के आधार पर नहीं था। उन्होंने सोचा, ''मेरा मस्तिष्क सोचता है तथा इसलिए मैं विचार कर पाता हूँ। जो कुछ मेरा चिन्तन मुझे बताता है, जो कुछ भी भौतिक दुनिया में देखता हूँ वह सत्य है। यही कारण था कि कैसे विभिन्न दार्शनिकों ने भिन्न भिन्न मतवाद प्रकट किए। किन्तु इस मत में कौन सही है और कौन गलत यह जाँचने का क्या पैमाना होगा? अगर सत्य विशेष है तो वह कैसे तय होगा? उदाहरणस्वरूप जल की वैज्ञानिक समझदारी में समानता है। कोई काल्पनिक मत यहाँ स्वीकार नहीं है। क्योंकि यह विज्ञान सम्मत सत्य है। यदि विभिन्न दार्शनिक एक ही विषय पर अपने-अपने समझदारी के अनुसार भिन्न-भिन्न मत प्रकट करें तब एक निश्चित एकमत निर्णय पर पहुँचा नहीं जा सकता है। यहीं पर मार्क्स का एक ऐतिहासिक योगदान है। वे पहले चिन्तक हुए जिन्होंने सत्य पर पहुँचने के लिए विज्ञान को औजार बनाया। आधुनिक विज्ञान का आगमन मार्क्स के समय हो चुका था। यह पूर्ववर्ती दार्शनिकों के समय नहीं हुआ था। मार्क्स ने कहा कि दर्शन के क्षेत्र में सत्य की खोज आधुनिक विज्ञान के आधार पर करनी होगी। इसलिए मार्क्सवाद विज्ञान पर आधारित दर्शन है। किसी दूसरे दर्शन ने मार्क्स के पहले या मार्क्स के बाद सत्य को जानने के लिए विज्ञान को औजार के रूप में इस्तेमाल नहीं किया। यही कारण है कि अगर कोई मार्क्सवाद को सटीक तरीके से इस्तेमाल करे, तो वह किसी भी खास घटना या प्रक्रिया के संदर्भ में ठोस सत्य के नजदीक पहुँच सकता है। विज्ञान के विभिन्न क्षेत्र भौतिक विज्ञान, रसायन विज्ञान, जीव विज्ञान, वनस्पति विज्ञान, भूगोल, भूगर्भ विज्ञान इत्यादि। द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद तथा विज्ञान की इन शाखाओं के बीच क्या अंतर है? कॉ. शिवदास घोष ने बताया कि इन शाखाओं में से भौतिक दुनिया के एक खास क्षेत्र में कोई विशेष सत्य या उस विशेष क्षेत्र के विशेष नियम अंवेषा का काम करता है। रसायन विज्ञान एवं पदार्थ के रसायनिक गुण का अध्ययन होता है, भौतिक विज्ञान में भौतिक गुण का जीवन विज्ञान में जीवों के संरचना संबंधी अध्ययन होता है इत्यादि। इस प्रकार विज्ञान की प्रत्येक शाखा द्वारा इन विशेष क्षेत्रों तथा उस विशेष क्षेत्र में काम कर रहे विशेष नियम का पता लगाने का अभ्यास चलता रहता है। प्रत्येक क्षेत्र में काम कर रहे विशेष नियम को द्वन्द्वात्मक तरीके से संयोजन, सह संबद्ध तथा एकीकरण करते हुए मार्क्स ने संचालन के एक सामान्य सत्य की अवधारणा को खोज निकाला। ये सार्वभौमिक नियम समाज सहित भौतिक जगत के प्रत्येक क्षेत्र में कार्यकारी होते हैं। इस प्रकार इन सामान्य नियमों को लागू कर कोई भी संपूर्ण भौतिक जगत का विस्तारपूर्वक अध्ययन कर सकता है। ये नियम द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद के तीन सिद्धान्तों के नाम से जाने जाते हैं। 1. विपरीत शक्तियों के बीच एक साथ एकता तथा द्वन्द्व-संघर्ष 2. परिमाणगत परिवर्तन से गुणात्मक परिवर्तन तथा विपरीत क्रम में 3. ध्वंस का ध्वंस। वास्तव में हेगेल थे जिन्होंने सर्वप्रथम द्वन्द्ववाद के इन तीन सिद्धांतों को दर्शाया था। जैसा कि एंगेल्स ने कहा था, ''द्वन्द्ववाद के ये तीनों सिद्धान्त हेगेल द्वारा महज चिन्तन के नियमों के तौर पर भाववादी लहजे में विकसित किए गए हैं। पहला उसने *डॉक्ट्रीन ऑफ बीइंग,* उनके *'लॉजिक'* (तर्कशास्त्र) के पहले भाग में, दूसरा पूर्ण रूप से अलग *डॉक्ट्रीन ऑफ एसेन्स,* उनके तर्कशास्त्र के सबसे महत्त्वपूर्ण दूसरे भाग में और अंत में तीसरा संपूर्ण व्यवस्था के निर्माण के मौलिक नियम के रूप में अलंकृत है। गलती इस तथ्य में थी कि ये नियम प्रकृति तथा इतिहास पर चिन्तन के नियम के तौर पर थोपे गये थे, उनसे निष्कर्ष के तौर पर नहीं निकाले गये थे।''[4] (प्रकृति की द्वन्द्वात्मकता)

मार्क्स ने दिखाया था कि ये तीनों सार्वभौमिक सिद्धांत विज्ञान के प्रत्येक क्षेत्र में, प्रकृति में तथा साथ ही साथ मानव समाज में घटने वाले परिवर्तनों के पीछे काम करते हैं। इस सभा में इन सिद्धान्तों पर विस्तृत चर्चा करने की कोई गुंजाइश नहीं है। मार्क्स ने कहा था कि एकता तथा विरोधी शक्तियों के बीच द्वन्द्व का सिद्धान्त विज्ञान द्वारा खोजा गया है। दूसरे शब्दों में यह वैज्ञानिक रूप से साबित किया गया कि आंतरिक द्वन्द्व के कारण गति है। उदाहरण के लिए विज्ञान ने यह खोज निकाला कि एक परमाणु के अन्दर धनात्मक आवेशयुक्त प्रोटोन और ऋणात्मक आवेशयुक्त इलैक्ट्रोन विद्यमान होते हैं। पहले न्यूटनीय विज्ञान के आधार पर यह सोचा गया था कि एक वस्तु में सर्वप्रथम बाहर से या अलग से गति प्रदान की गई (प्राइम मूवर) है। बाद में मार्क्स ने कहा कि विज्ञान ने इस बात की पुष्टि कर दी है कि प्रत्येक विशेष वस्तु गति में है और इसकी गति का कारण अन्दरूनी द्वन्द्व है। तमाम परिवर्तनों का मतलब गति है। पदार्थों के बीच निरन्तर अंतर्द्वन्द्व तथा पारस्परिक अन्तर्क्रिया होती रहती है। इस प्रकार वस्तु का अस्तित्व, आंतरिक व बाह्य द्वन्द्व दोनों के कारण होता है। यह द्वन्द्व सम्पूर्ण भौतिक जगत में क्रियाशील है। पदार्थ न तो पैदा किया जा सकता है और न ही ध्वंस किया जा सकता है। पदार्थ हमेशा गति में है और परिवर्तनशील है। उदाहरणस्वरूप गणित की खोज वस्तु की गणना के लिए हुई। गणित में पहला अंक या अंतिम अंक कुछ नहीं होता है। यहाँ तक कि अंक 1 को भी कई असंख्य टुकड़ों में विभाजित कर सकते हैं। क्योंकि पदार्थ का कोई परम आदि या परम अंत नहीं है। पदार्थ की उत्पत्ति तथा अवसान दोनों सापेक्ष हैं। एक पदार्थ का दूसरे पदार्थ में रूपांतरण होता है। उस हिसाब से एक विशेष वस्तु की उत्पत्ति भी है तथा अंत भी है। जब एक वस्तु का ध्वंस होता है, तब यह दूसरे में रूपांतरित हो जाता है। यह निरन्तर चलता रहता है। इसलिए द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद मार्क्स की कोई काल्पनिक मनोगत अवधारणा नहीं है। आधुनिक विज्ञान के आविष्कारों के आधार पर मार्क्स सर्वप्रथम इस वैज्ञानिक दर्शन को मानवता के सामने लाए थे।

मार्क्स ने दिखाया था कि श्रमिक वर्ग को है अपनी मुक्ति के लिए दर्शन विकसित करने की जरूरत

मार्क्स का एक ऐतिहासिक कथन है, ''दार्शनिकों ने दुनिया की विभिन्न तरीकों से सिर्फ व्याख्या की है, सवाल तो इसे बदलने का है।''[5] (फूअरबाख़ पर थीसिस) उनका कहने का अभिप्राय था कि दार्शनिक लोग केवल दुनिया की तरह-तरह से व्याख्या करने में व्यस्त थे किन्तु उन्होंने यह नहीं सोचा कि इस प्रकार की व्याख्या समाज का कोई हित कर रही है या नहीं। उनके पास समाज को बदलने का कोई विचार नहीं था। किन्तु सही दर्शन को विकसित करने का मुख्य उद्देश्य क्या होना चाहिए? ज्ञान, दर्शन या सत्य की खोज विकसित करने का क्या उद्देश्य होना चाहिए? क्या वस्तुगत परिस्थिति जिसमें हम रह रहे हैं, संघर्ष कर रहे हैं और साथ ही साथ जिस विश्व परिस्थिति से हम रूबरू हो रहे हैं, उसमें जीवन को बेहतर बनाने के लिए परिवर्तन करने का हमारा उद्देश्य नहीं होना चाहिए? क्या हमारा उद्देश्य अपने चिन्तन, अपने दार्शनिक अहसास, समझदारी को लागू करते हुए जीवन की स्थिति को बेहतर बनाने

(शेष पृष्ठ 7 पर)

सर्वहारा के महान नेता कॉमरेड शिवदास घोष की 41वीं बरसी पर आयोजित हुई स्मृति सभाएं

भोपाल (म.प्र.) : इस भयावह स्थिति में शोषण उत्पीड़न के खिलाफ आम मेहनतकश जनता के आपसी भाईचारे को मजबूत बनाने में ही आज क्रांतिकारियों का अस्तित्व निहित है और यही कॉमरेड शिवदास घोष को हमारी सच्ची श्रद्धांजली होगी। एसयूसीआई (सी) के मध्य प्रदेश राज्य सचिव कॉमरेड प्रताप सामल ने अपने वक्तव्य में सरदार सरोवर बांध के विस्थापितों, किसानों, व्यापारियों, महिलाओं आदि द्वारा चलाए जा रहे आन्दोलनों को कॉमरेड शिवदास घोष के विचारों की रोशनी में तेज करने का आह्वान किया।

सभा की अध्यक्षता एसयूसीआई (सी) भोपाल जिला सचिव कॉमरेड जे.सी. बरई ने की।

पटियाला (पंजाब) : सर्वहारा के महान नेता और इस युग के अन्यतम महान मार्क्सवादी चिन्तनकार कॉमरेड शिवदास की 41वीं बरसी पर यहां 6 अगस्त को एसूसीआई(सी) के पंजाब सूबा इन्चार्ज कॉ. अमिन्दर पाल सिंह की अध्यक्षता में स्मृति सभा आयोजित की गई। पार्टी के म.प्र. राज्य सचिव कॉ. प्रताप सामल सभा के मुख्य वक्ता थे। उनके अलावा कॉ. इन्दर सिंह, थाना सिंह, जसविन्दर सिंह, डॉ. जगदीश और शिवाशीष पहराज भी सभा में उपस्थित रहे।

कॉमरेड शिवदास घोष के जीवन-संघर्ष पर रोशनी डालते हुए कॉ. सामल ने कहा कि मार्क्सवाद-लेनिनवाद के अध्ययन के आधार पर कॉमरेड शिवदास घोष ने समझ लिया था कि आजादी आन्दोलन के दौरान देश में कम्युनिस्ट पार्टी नामधारी पार्टी सही कम्युनिस्ट पार्टी नहीं थी। इसलिए इस शून्यता को पाटते हुए उन्होंने एसयूसीआई(सी) की स्थापना की थी।

कॉ. सामल ने पार्टी को मजबूत करने और जनजीवन के ज्वलंत सवालों पर जोरदार संयुक्त आन्दोलन गठित करने के लिए वाम दलों से आगे आने की अपील की।

रायपुर (छ.ग.) : सर्वहारा के महान नेता, महान मार्क्सवादी दार्शनिक व हमारी पार्टी के संस्थापक महामंत्री कॉमरेड शिवदास घोष के स्मृति दिवस पर 10 अगस्त को रायपुर छ.ग. में एक सभा आयोजित की गई जिसमें पार्टी के उड़िसा राज्य सचिव कॉ धुर्जटी दास मुख्य वक्ता के रूप में उपस्थित थे। उन्होंने अपने वक्तव्य में कहा कि आजादी के इतने वर्षों के बाद भी आम जनता की कोई भी समस्या हल नहीं हुई है बल्कि समस्याएं और भी बढ़ती जा रही हैं। कॉमरेड शिवदास घोष ने ही सही विश्लेषण करके बताया था कि देश की राजसत्ता पर पूँजीपति वर्ग ने कब्जा किया हुआ है और मजदूर वर्ग सहित आम जनता पर शोषण-उत्पीड़न लगातार बढ़ रहा है। उन्होंने देश की वर्तमान परिस्थिति के बारे में विस्तारपूर्वक चर्चा की और कॉमरेड शिवदास घोष की शिक्षाओं के अनुसार देश के क्रांतिकारी आंदोलन में अपनी सचेत भूमिका अदा करने की अपील की। कार्यक्रम में कॉ आत्माराम साहू, डॉ. सोम गोस्वामी व कॉ. विश्वजीत हारोडे ने भी वक्तव्य रखा।

मुम्बई : कॉमरेड शिवदास घोष स्मृति दिवस सार्वजनिक केंद्र हाल, तुलसीवाई, ताड़देव, मुंबई सेंट्रल (पश्चिम), मुंबई में शाम को हमारी पार्टी की मुंबई आयोजन समिति की तरफ से सार्वजनिक बैठक करके मनाया गया, एसयूसीआई(कम्यूनिस्ट) मुंबई सांगठनिक कमेटी के सचिव कॉ. अनिल कुमार त्यागी ने सभा की अध्यक्षता की और मुख्य वक्ता थे पार्टी के स्टाफ सदस्य और गुजरात राज्य सचिव कॉ. डी एन रथ। कॉमरेड रथ ने अपने संबोधन में कहा : हमारे देश और दुनिया में इतनी सारी घटनाएं घटती हैं, ये घटनाएं केवल मार्क्सवाद-लेनिनवाद-कॉमरेड शिवदास घोष विचार के आधार पर ही ठीक से समझी और समझाई जा सकती

हैं। पूंजीवादी व्यवस्था मंदी के संकट के कारण अब लकवा में है। मोदी की अगुआई में भाजपा सरकार हिटलर की तरह पूरा फासीवाद लाने की कोशिश कर रही है ताकि संकटग्रस्त पूंजीवाद को टिकाये रखा जा सके। लोकतंत्र पर गंभीर हमले हो रहें हैं। लोग एक वैकल्पिक राजनैतिक शक्ति की तलाश कर रहे हैं। इस स्थिति में हमें एसयूसीआई(कम्युनिस्ट) पार्टी को विकसित और सुदृढ़ करने की आवश्यकता है ताकि लोगों के आंदोलन का नेतृत्व कर सकें। सभा को पार्टी की मुम्बई सांगठनिक समिति के सदस्यों कॉमरेड योगेंद्र कुलश्रेष्ठ और कॉमरेड जयराम विश्वकर्मा ने भी संबोधित किया।

इस अवसर पर 9 अगस्त को नागपुर पार्टी कार्यालय में 'एसयूसीआई(सी) ही एकमात्र सही साम्यवादी पार्टी क्यों? ' विषय पर स्टडी क्लास हुई। एसयूसीआई(सी) के ओडिसा राज्य कमेटी सदस्य कॉ. शंकर दासगुप्ता ने इसका संचालन किया और पार्टी की पं.बं. राज्य कमेटी सदस्य कॉ प्रतिभा नायक भी मौजूद थी।

हैदराबाद (तेलंगाना व आन्ध्र प्रदेश) : 41 वीं स्मारक सभा हैदराबाद में 6 अगस्त को हुई थी। मुख्य वक्ता पार्टी के केंद्रीय समिति के सदस्य कॉमरेड के. राधाकृष्ण थे और अन्य वक्ता पार्टी के आंध्र प्रदेश और तेलंगाना राज्य सचिव कॉमरेड के. श्रीधर थे। सभा प्रेस क्लब, बशीर बाग, हैदराबाद में हुई। यह सभा आंध्र प्रदेश और तेलंगाना राज्यों की सांगठनिक कमेटी के सदस्य कॉमरेड सी. मुराहिरी की अध्यक्षता में हुई। सभा कॉमरेड शिवदास घोष पर रचित गीत से और उनके चित्र पर पुष्पहार अर्पित कर शुरू हुई और इंटरनेशनल गीत के साथ समाप्त हुई।

घाटशिला (झारखण्ड) : कॉमरेड शिवदास घोष स्मृति सभा 5 अगस्त को घाटशिला स्थित मार्क्सवाद-लेनिनवाद-शिवदास घोष विचारधारा अध्ययन केंद्र में आयोजित की गई। कॉमरेड अरुण कुमार सिंह, सचिव, एसयूसीआई (सी) बिहार राज्य समिति और पार्टी के स्टाफ सदस्य मुख्य वक्ता थे जबकि कॉमरेड रॉबिन समाजपति, सचिव एसयूसीआई (सी) झारखंड राज्य आयोजन समिति ने बैठक की अध्यक्षता की।

पटना (बिहार) : कॉमरेड शिवदास घोष स्मृति सभा 6 अगस्त को स्थानीय आईएमए हॉल में आयोजित की गई। कॉमरेड रॉबिन समाजपति, सचिव, एसयूसीआई (कम्युनिस्ट) झारखंड राज्य सांगठनिक कमेटी मुख्य वक्ता थे जबकि कॉमरेड अरुण कुमार सिंह, सचिव, एसयूसीआई (सी) बिहार स्टेट कमेटी ने बैठक की अध्यक्षता की।

जौनपुर(उ.प्र.) : कॉमरेड शिवदास घोष स्मृति सभा 6 अगस्त को सल्तनत बहादुर इंटर कॉलेज, बदलापुर में आयोजित की गई। सब्जीमण्डी बदलापुर स्थित पार्टी कार्यालय से इन्दिरा चौक होते हुए सभा स्थल तक एक शानदार जुलूस निकाला गया। कॉम्सोमोल सदस्यों ने परेड की और गार्ड ऑफ ऑनर दिया। सभा की अध्यक्षता एसयूसीआई (सी) उ.प्र. राज्य कार्यालय सचिव कॉमरेड जगन्नाथ वर्मा ने की। संचालन पार्टी के जौनपुर जिला कमेटी सदस्य कॉ. मिथिलेश कुमार मौर्य ने किया। सभा

के मुख्य वक्ता पार्टी के उ.प्र. राज्य सचिवमण्डल सदस्य कॉ. स्वप्न चटर्जी ने कॉमरेड शिवदास घोष के जीवन-संघर्ष पर प्रकाश डाला। उन्होंने मार्क्सवाद-लेनिनवाद-शिवदास घोष के चिन्तन को जन-जन तक ले जाने का आह्वान किया। सभा को कॉ. हीरालाल मौर्य, जयनारायण मौर्य, प्रमोद कुमार शुक्ल, महेन्द्र कुमार मौर्य और जयप्रकाश मौर्य (एसयूसीआई(सी) सुल्तानपुर जिला सचिव) ने भी सम्बोधित किया।

सूरत (गुजरात) : 5 अगस्त को स्थानीय कंजीभाई देसाई हॉल में पार्टी की जिला सांगठनिक कमेटी द्वारा आयोजित कॉमरेड शिवदास घोष स्मृति सभा की अध्यक्षता सूरत जिला सांगठनिक कमेटी के सचिव, कॉमरेड रामभरत मौर्य ने की। मुख्य वक्ता गुजरात राज्य सांगठनिक कमेटी के सचिव, कॉमरेड द्वारिका नाथ रथ थे।

कॉमरेड रथ ने अपने भाषण में हमारे देश में फासीवाद के आने वाले खतरे को समझाया और कॉमरेड शिवदास घोष की शिक्षाओं के आधार पर इसका सामना करने के लिए आगे आने का आह्वान किया। कॉमरेड सत्येंद्र सिंह, कॉमरेड नवल किशोर झा, कॉमरेड राममूर्त मौर्य ने भी बात रखी।

गुजरात में बाढ़ की गंभीर स्थिति के कारण अहमदाबाद के पार्टी कॉमरेडं, बड़ौदा, बनासकाटा जिले में बाढ़ राहत कार्यों में जुटे हैं। इसलिए राज्य स्तरीय स्मृति सभा आयोजित नहीं की जा सकी बल्कि इसके बजाय जिला स्तर पर कार्यक्रम चलाए गए

महान नवंबर क्रांति शताब्दी वर्ष के अवसर पर

पार्टी कार्यालय का उद्घाटन

झारखंड राज्य के पूर्वी सिंहभूम जिला पोटका प्रखंड की कवाली पंचायत में एसयूसीआई(कम्युनिस्ट) पार्टी कार्यालय का उद्घाटन किया गया। उद्घाटन के अवसर पर एक सभा हुई। सर्वप्रथम पार्टी के जिला सचिव कॉमरेड विमल दास ने लाल झंडा फहराया एवं जन आंदोलन में शहीद हुए क्रांतिकारियों की शहीद वेदी पर पुष्प अर्पित किए। तत्पश्चात उन्होंने फीता काट कर कार्यालय का उद्घाटन किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता देवेन महतो ने की।

सभा को संबोधित करते हुए जिला सचिव कॉमरेड विमल दास ने कहा की यह कार्यालय कोवाली पंचायत के तमाम संघर्षशील मेहनतकश किसान-मजदूरों, जनता का कार्यालय है। इस कार्यालय का निर्माण आम जनता के सहयोग से ही हुआ है। इसलिए इस पर सबका अधिकार है। यह जनजीवन के ज्वलंत सवालों को लेकर आंदोलन गठित करने का कार्यालय है। इस कार्यालय मे आप तमाम लोगों का स्वागत है। आशा है कि आप इस संघर्ष में हमारे साथ रहेंगे।

आज के इस कार्यक्रम में सरायकेला जिला पार्टी प्रभारी कॉमरेड लिली दास, पूर्वी सिंहभूम जिला कमेटी सदस्य कॉ. सुनील महतो, धीरेन भगत, सोनका महतो, पतित पावन कुइला, सरायकेला पार्टी जिला कमेटी सदस्य कॉ. विष्णुदेव गिरी, पूर्वी सिंहभूम छात्र संगठन के अध्यक्ष प्रवीण कुमार महतो सहित सैकड़ों पार्टी कार्यकर्ता एवं ग्रामीण लोग उपस्थित थे।

6 R.N.I. No.- 43022/85
P.R.No.-DL(C)-01/1123/2015-2017
Posting at New Delhi PSO on 7–8 and 22–23 Fortnightly

बंगलुरु में 100 साल पुराने यूवीसीई कॉलेज बंद किये जाने का विरोध

विरोध प्रदर्शन में जाने-माने शिक्षाविदों ने की शिरकत

17 अगस्त को, एआईडीएसओ और अखिल भारतीय शिक्षा बचाओ समिति के बैनर के नीचे सैकड़ों छात्रों ने केवी सर्कल में यूवीसीई कॉलेज के सामने एक विरोध प्रदर्शन किया। यह प्रदर्शन यूवीसीई के के.आर. सर्कल परिसर को बंद करने के लिए राज्य सरकार की चाल के खिलाफ था। दिलचस्प है कि 1960 से 2010 तक हर दशक से विरोध में पूर्व छात्र थे। कई पके बालों वाले यूवीसीई छात्र, 1960 के दशक से 'के.आर. सर्कल में यूवीसीई को बचाने' के लिए अपनी आवाज बुलंद करते हुए प्रेरणादायक जुलूसों में शामिल हुये!

जो कॉलेज 1913 में 'स्कूल ऑफ मैकेनिकल इंजीनियरिंग' के रूप में शुरू किया गया था, 1917 में इसका नाम 'यूनिवर्सिटी विश्वेश्वरैया कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग (यूवीसीई)' पड़ गया। यह भारत में स्थापित पांचवां इंजीनियरिंग कॉलेज है, और सर एम. विश्वेश्वरैया की दिमागी उपज था। यूवीसीई इस साल अपने शताब्दी का जश्न मना रहा है, और सरकार इसे बंद करना चाहती है! क्या त्रासदी है! गरीब और मध्यम वर्ग के हजारों मेधावी छात्रों की यह उम्मीद है। वर्तमान में, 4,500 से अधिक यूजी और पीजी छात्र यहां पढ़ रहे हैं।

यह सच है कि हाल के दिनों में कॉलेज कई समस्याओं का सामना कर रहा है। लेकिन इसके लिए कौन जिम्मेदार है? सरकार जिसे बुनियादी ढांचे और मूल सुविधाओं के विकास के लिए धन मुहैया कराना चाहिए था, वह उस धन में कटौती कर रही है। नतीजतन वर्तमान इमारत जर्जर हो चुकी है और देखभाल की जरुरत है। एक बहाने के रूप में इसका इस्तेमाल करते हुए, राज्य सरकार ने के.आर. सर्कल परिसर से ज्ञान भारती परिसर में कॉलेज को स्थानांतरित करने का आदेश पारित किया है जो शहर के बाहर स्थित है। इस कदम ने छात्रों और आम लोगों के बीच कई सवाल खड़े कर दिए हैं।

सबसे पहले, ज्ञान भारती परिसर (जो इस परिसर से 15 किलोमीटर दूर है) पर क्या आवश्यक बुनियादी ढांचा उपलब्ध है, जो 4,500 से अधिक छात्रों को सेवा प्रदान कर सकता हो? क्या आवश्यक प्रयोगशालाओं और मशीनों से सुसज्जित प्रयोगशालाएं हैं? जवाब, नहीं है! कक्षाएं लगाने के लिए पर्याप्त कक्ष भी उपलब्ध नहीं हैं! तो फिर कॉलेज स्थानांतरण की जल्दी क्यों है?

दूसरे, ज्ञान भारती परिसर में कॉलेज को स्थानांतरित करने के बाद के आर सर्किल परिसर का क्या होगा? संबंधित अधिकारी इस सवाल पर चुप हैं। हो सकता है कि शहर के केंद्र में 15 एकड़ भूमि पर भूमाफिया की गिद्धदृष्टि लगी होगी? लोगों की आशंका है कि वाणिज्यिक निहित स्वार्थ दिन और रात इस जमीन को हड़पने में लगे हुए हैं,

इसकी स्थापना से ही, यूवीसीई के.आर. सर्कल में स्थित है। सौ साल की अपनी यात्रा में, यूवीसीई भारत में सर्वश्रेष्ठ इंजीनियरिंग संस्थानों में से एक के रूप में उभरा है। इसने हजारों इंजीनियरों, प्रोफेसरों और वैज्ञानिकों को तैयार किया है जिन्होंने दुनिया भर में विभिन्न क्षमताओं पर काम किया है, और कई लोग अभी भी सेवा कर रहे हैं। आज भी गरीब परिवारों से आने वाले हजारों मेधावी छात्रों के लिए, यूवीसीई में दाखिला लेना उनकी पहली पसंद है। निजी कॉलेजों में शुल्क बहुत अधिक है, बहुत से लोग खर्च वहन नहीं कर सकते और शायद कर्नाटक में कुछ ही सरकारी इंजीनियरिंग कॉलेज हैं। केआर सर्कल कैंपस का एक ऐतिहासिक महत्व है और इंजीनियरों की कई पीढ़ियों को इस परिसर से जुड़ी हुई अनेक यादें हैं। इसी वजह से के.आर. सर्कल में यूवीसीई के बुनियादी ढांचे को संरक्षित करना और सुधारना और अधिक जरूरी हो जाता है। लेकिन सरकार इसके भावनात्मक मूल्य और विरासत की अनदेखी कर रही है और कॉलेज को ध्वस्त करने की कोशिश कर रही है!

अगर सरकार सचमुच सर एम. विश्वेश्वरैया का सम्मान करती है और केवल विद्यार्थियों के सर्वोत्तम हित में सोचती है, तो उन्हें केआर सर्कल परिसर में बरकरार रखते हुए कॉलेज को जेबी कैंपस में विस्तारित करना चाहिए, इससे बहुत से मेधावी छात्रों को मदद मिलेगी, निजी इंजीनियरिंग कॉलेजों द्वारा बटोरी जा रही बेतहाशा फीस का भुगतान करना जिनके बस की बात नहीं है। इसलिए यूवीसीई को जरूरत है नवीनीकरण की, बेहतर बुनियादी ढांचे और विस्तार की, स्थानांतरण की नहीं।

यूवीसीई कॉलेज के सामने एक प्रतीकात्मक विरोध के बाद, कॉलेज के ठीक सामने यूवीसीई एल्युमनी हाल में एक प्रतिवाद बैठक आयोजित की गई। हाल खचाखच भरा था, सैकड़ों छात्र हाल के बाहर खड़े थे और भाषणों को सुन रहे थे। सम्मेलन को संबोधित करते हुए पद्म विभूषण से नवाजे गए प्रोफेसर रोडम नरसिंह (यूवीसीई के पूर्व छात्र और प्रसिद्ध वैज्ञानिक, जेएनसीएएसआर) ने कहा, ''परिसर यहां बना रहना चाहिए। उन्हें भवन का नवीकरण और नए भवनों का निर्माण करना चाहिए। विकास के लिए के.आर. सर्कल में परिसर के अंदर पर्याप्त जगह है। कॉलेजों के भविष्य और अधिक शोध गतिविधियों के लिए एक दृष्टि की आवश्यकता है।''

प्रोफेसर चिदानंद गौड़ा (यूवीसीई के पूर्व छात्र और कुवेम्पु विश्वविद्यालय के पूर्व उप-कुलपति) ने कहा, ''राज्य सरकार को अधिक विभाग जोड़ने चाहिएं और इस परिसर का विस्तार करना चाहिए। अगर वे चाहते हैं, तो जेबी (ज्ञान भारती) परिसर में एक और नया सरकारी इंजीनियरिंग कॉलेज शुरू करें। मुख्यमंत्री को हस्तक्षेप करना चाहिए और स्थानांतरण प्रक्रिया को रोकना चाहिए।''

डॉ. प्रभादेवा (पूर्व उपकुलपति, बैंगलोर विश्वविद्यालय) ने कहा, ''जब मैं बैंगलोर विश्वविद्यालय का उप कुलपति था, तब हमने यूवीसीई को आईआईटी का दर्जा देने की सिफारिश की थी। अभी भी यूवीसीई को आईआईटी के दर्जे तक बढ़ाने का समय है। कोई भी नहीं जानता कि यूवीसीई पर त्रिविभाजन में ठीक-ठीक रिपोर्ट में क्या है। जेबी कैंपस में यूवीसीई को स्थानांतरित करना वास्तव में अवैज्ञानिक है, इसके बजाय, सरकार को इसे सुधारना चाहिए।''

श्रीमती के. उमा (सचिव, ऑल इंडिया सेव एजुकेशन कमेटी, कर्नाटक) ने कहा, ''निजी कॉलेज जो शिक्षा बेचते हैं, वे सभी जगहों पर कुकुरमुत्ते की तरह फैल रहे हैं। इन दिनों सरकारी कॉलेजों को ढूंढना मुश्किल है लेकिन यूवीसीई भारत में सर्वश्रेष्ठ इंजीनियरिंग संस्थानों में से एक के रूप में उभरा है। कई रियल एस्टेट्स ऐतिहासिक कॉलेज से संबंधित 13 एकड़ जमीन को पहले से ही हड़पने की कोशिश कर रहे हैं। हमें संस्थान को बचाना चाहिए।''

श्री जी. सतीशकुमार (यूवीसीई के पूर्व छात्र और कर्नाटक के ब्रेक थ्रू साइन्स सोसायटी के अध्यक्ष), श्री वासुदेव मूर्ति (यूवीसीई पूर्व छात्र और यूवीसीई छात्र संघ के पूर्व अध्यक्ष), श्री रवीन्द्रन बी बी (उपाध्यक्ष, एआईडीएसओ, कर्नाटक) और कॉलेज के कई पूर्व छात्रों ने विरोध सभा में भावभीने वक्तव्य रखे। कई अन्य प्रमुख शिक्षाविदों और पूर्व छात्रों ने इस आंदोलन को अपना समर्थन दिया है।

बंगलुरु : कॉलेज बंदी के विरोध प्रदर्शन में शामिल पूर्व वीसी डॉ. एन. प्रभुदेवा, के. उमा, शेखर

सच्चा सौदा डेरा प्रमुख के खिलाफ अदालत के फैसले का

एआईएमएसएस ने किया स्वागत

अखिल भारतीय महिला सांस्कृतिक संगठन (एआईएमएसएस) ने गत 29 अगस्त 2017 को जारी एक बयान में सिरसा, हरियाणा के डेरा सच्चा सौदा प्रमुख गुरमीत राम रहीम को 2002 में डेरा परिसर में उनकी दो साध्वियों के बलात्कार और यौन उत्पीड़न के आरोप में सीबीआई की विशेष अदालत द्वारा अपराधी ठहराये जाने और दस-दस साल (कुल 20 साल) की कठोर कारावास के साथ-साथ 30 लाख रुपए के जुर्माने की सजा के दिये गए फैसले का स्वागत किया। अपने चुनावी हित के लिए डेरा अपराधियों के आगे आत्मसमर्पण करने वाली और आदलत का आदेश सुनाये जाने के बाद पंचकुला और सिरसा आदि कस्बों में आगजनी व तोड़फोड़ करने की असामाजिक तत्वों को खुली छूट देने वाली भाजपा-नीत हरियाणा राज्य सरकार की भी एआईएमएसएस ने कड़ी निंदा की।

एआईएमएसएस ने सभी सही सोच रखने वाले व्यक्तियों से अपील की कि 'बाबागिरी' के चंगुल से खुद को मुक्त करें, सम्मानजनक जीवन जीने के लिए मिल-जुल कर संघर्ष करें और हरियाणा के साथ ही साथ पूरे देश में इस प्रकार की आपराधिक गतिविधियों के खिलाफ जुझारू आन्दोलन गठित करें।

महिलाओं और बच्चों पर बढ़ते अपराध के खिलाफ

अखिल भारतीय विरोध-दिवस के अवसर इलाहाबाद में जिलाधिकारी को ज्ञापन

इलाहाबाद (उ.प्र.) : 22 अगस्त 2017 को ऑल इण्डिया महिला सांस्कृतिक संगठन (एआईएमएसएस) की इलाहाबाद इकाई के प्रतिनिधिमण्डल ने जिलाधिकारी, इलाहाबाद से मिल कर, उन्हें प्रधानमंत्री को संबोधित हजारों हस्ताक्षरों से युक्त एक ज्ञापन सौंपा। पिछले काफी अरसे से एआईएमएसएस की इलाहाबाद इकाई महिलाओं के सम्मान की रक्षा और सुरक्षा को सुनिश्चित करने के लिये नशाखोरी, पोर्न साइट्स, अश्लील साहित्य, सिनेमा एवं विज्ञापनों पर रोक लगाने की मांग को लेकर, एक हस्ताक्षर अभियान चला रहा थी। 22 अगस्त को महिलाओं और बच्चों पर बढ़ते अपराध के खिलाफ अखिल भारतीय विरोध-दिवस के अवसर पर ये हस्ताक्षर प्रधानमंत्री के पास जिलाधिकारी के माध्यम से भेजे गये।

प्रतिनिधिमंडल ने जिलाधिकारी कार्यालय में लोगों को संबोधित करके महिला उत्पीड़न के उपरोक्त कारणों को विस्तार से बताया और उनसे महिलाओं के सम्मान के लिये इस संगठन का हाथ मजबूत करने और इस अभियान का अंग बनने के लिये अपील की। प्रतिनिधिमंडल ने बहुत उत्साहपूर्वक ''महिला उत्पीड़न : कारण और समाधान'' से संबंधित पर्चे भी बांटे। लोगों ने इस प्रयास को बहुत सराहा। इस अभियान में ज्ञानशीला शर्मा, गीता त्रिपाठी, निधि सिंह, कल्याणी रायचौधरी, संध्या मिश्रा, लता शर्मा, सुष्मिता राय, सुधा त्रिपाठी, रागिनी पटेल आदि ने भाग लिया। कार्यक्रम का संचालन रश्मि मालवीय ने किया।

करनाल(हरियाणा) में एआईकेकेएम का विरोध प्रदर्शन

महान नवंबर क्रांति शताब्दी वर्ष समारोह आयोजित

नागपुर (महाराष्ट्र) : महान नवंबर क्रांति के 100वें साल के अवसर पर नवंबर क्रांति शताब्दी समारोह समिति, महाराष्ट्र की ओर से, 9 सितम्बर को यहां संविधान चौक (आरबीआई चौक) पर एक प्रभावशाली जनसभा की गई। इसमें महाराष्ट्र के विभिन्न जिलों से सैकड़ों लोग शामिल हुए। सभा की अध्यक्षता एसयूसीआई(सी) के मुम्बई सांगठनिक कमेटी के सचिव कॉमरेड अनिल त्यागी ने की। नागपुर रेलवे स्टेशन से सभा स्थल तक एक सुसज्जित जुलूस निकाला गया। लोग हाथों में महान लेनिन और स्तालिन की तस्वीरें लिये हुये थे। सभा के मुख्य वक्ता एसयूसीआई(सी) के बिहार राज्य सचिव कॉमरेड अरुण कुमार सिंह थे। उन्होंने अपने सम्बोधन में महान नवम्बर क्रान्ति के महत्व पर प्रकाश डाला और बताया कि किस तरह रूस के पहले समाजवादी राज्य ने थोड़े से समय में ही बेरोजगारी, महंगाई, अशिक्षा, स्वास्थ्यहीनता, भुखमरी, गरीबी, भिक्षावृत्ति आदि बुराइयों को जड़ से खत्म कर दिया था। शुरूआती भाषण पार्टी की महाराष्ट्र राज्य सांगठनिक कमेटी के सदस्य कॉमरेड योगेन्द्र कुलश्रेष्ठ ने दिया। सभा में पार्टी की नागपुर जिला सांगठनिक कमेटी के सचिव कॉमरेड विजयेन्द्र राजपूत ने भी बात रखी। नवंबर क्रांति शताब्दी समारोह समिति के सदस्यगण कॉमरेड्स जयराम विश्वकर्मा, माधुरी निकुरे, प्रमोद काम्बले, अतुल उडाडे और आशीष लोखण्डे भी मंच पर विराजमान थे।

नारनौल (हरियाणा) : नवम्बर क्रान्ति शताब्दी वर्ष समारोह समिति की ओर से 9 सितम्बर को महेन्द्रगढ़ जिले के नारनौल शहर में महान नवम्बर क्रान्ति शताब्दी वर्ष पर सभा आयोजित की गई और जूलूस निकाला गया। सभा को एसयूसीआई(सी) के केन्द्रीय कमेटी सदस्य सह हरियाणा राज्य सचिव कॉ. सत्यवान, जिला इंचार्ज कॉ. औमप्रकाश, जिला सांगठनिक कमेटी सदस्य कॉ. बलबीर सिंह और सूबे सिंह ने भी सम्बोधित किया।

भोपाल में जन सभा

भोपाल (म.प्र.) : 11 सितंबर को, एक प्रभावशाली राज्य स्तरीय रैली का आयोजन किया गया। भोपाल में नीलम पार्क में मध्य प्रदेश राज्य एसयूसीआई (सी) की रैली शराब पर पूर्ण प्रतिबंध लगाने, बिजली-पानी के निजीकरण को रोकने, 1.08 लाख सरकारी स्कूलों को बंद करने का आदेश रद्द करने, स्कूलों को निजी ऑपरेटरों को न सौंपने, कक्षा 1 से पास-फेल प्रणाली पुनः चालू करने, मंदसौर में आंदोलनकारी किसानों पर फायरिंग करने के लिए दोषी तत्वों, पुलिस अधिकारियों और राजनीतिज्ञों को सख्त सजा देने, पीड़ित किसान परिवारों को फसल के नुकसान का पर्याप्त मुआवजा देने, किसानों का कर्ज माफ करने, महिलाओं पर होने वाले अपराध रोकने के लिए उचित कदम उठाने, जीएसटी की वापसी और सरदार सरोवर बांध परियोजना की वजह से हुए विस्थापितों का उचित पुनर्वास करने आदि मांग की गई। एसयूसीआई(सी) म.प्र. राज्य सांगठनिक कमेटी के सचिव कॉमरेड प्रताप सामल ने सभा को संबोधित किया। उन्होंने कहा कि भाजपा की अगुवाई वाली केंद्रीय और राज्य सरकारें एक पर एक जन विरोधी नीतियां ला रही हैं जो श्रमिकों के जीवन और आजीविका को खत्म कर रही हैं। उन्होंने सांप्रदायिक ताकतों द्वारा की गई पत्रकार गौरी लंकेश सहित तर्कशील व्यक्तियों की कायराना हत्याओं की भी निंदा की। एसयूसीआई(सी) के राज्य कमेटी के सदस्य कॉमरेड सुनील कुमार, की अध्यक्षता में हुई सभा को कॉमरेड्स जे सी बरई, रचना अग्रवाल, मुदित भटनागर और मनीष श्रीवास्तव, राज्य के सभी नेताओं ने संबोधित किया।

कार्ल मार्क्स

(पृष्ठ 4 का शेष)

का नहीं होना चाहिए? इस उद्देश्य से जुदा दर्शन पर महज ख्याली पुलाव पकाने वाली बौद्धिक चर्चाओं की क्या जरूरत है? सर्वसाधारण मानवता के कल्याण की खातिर कोई दायित्व महसूस किये बिना, मनुष्य के जीवन को बेहतर बनाने के उद्देश्य से परिवर्तन लाये बिना 'पवित्र' ज्ञान पाने के रुझान का क्या उद्देश्य है? ज्ञान भण्डार में मार्क्स की यह टिप्पणी भी खास महत्व की है। वह पहले व्यक्ति थे जिन्होंने ज्ञान व दर्शन अर्जित करने के उद्देश्य को जीवन को बेहतर बनाने के लिए मनुष्य द्वारा सचेत रूप से परिवर्तन की आनुपातिक पहल करने के साथ जोड़ा और इस प्रकार एक नया आयाम उन्होंने खोल दिया। किन्तु इससे किसी को यह नहीं समझना चाहिए कि पूर्ववर्ती दार्शनिकों ने सामाजिक परिवर्तन में कोई भूमिका अदा नहीं की थी। उन्होंने ऐसी भूमिका अदा की थी। लेकिन वह भूमिका सचेत रूप से नहीं, बल्कि अचेत रूप से अदा की थी। यहाँ तक कि दार्शनिक स्वयं भी उस भूमिका के बारे में नहीं जानते थे। उनमें से किसी ने भी सचेत रूप से सामाजिक परिवर्तन के उद्देश्य से दर्शन विकसित नहीं किए। बल्कि उस समय के तमाम दर्शन वस्तुगत परिस्थिति से प्राप्त सामग्री के आधार पर उत्पन्न हुए। इस प्रकार वे दर्शन या तो सामाजिक विकास लाने में परिपूरक थे या किसी दर्शन ने प्रतिक्रियावादी सिद्धांत के रूप में बौद्धिक क्रिया को बाधित किया। लेकिन दार्शनिकों ने सोचा कि वे तो हितकारी दर्शन विकसित करने में लगे रहे। इस संबंध में यह जरूरी है कि मार्क्स के एक दूसरे महत्वपूर्ण योगदान की चर्चा हो। उस समय आम धारणा थी, जो आज भी कायम है कि केवल कुछ मुट्ठी भर 'बुद्धिमान' लोगों को दर्शन जैसे एक जटिल विषय का अध्ययन करना चाहिए क्योंकि यह समझना साधारण जन के बस की बात नहीं है। मार्क्स पहले व्यक्ति थे जिन्होंने यह बताया कि श्रमिक वर्ग सहित आम अवाम, जनता को दर्शन सीखना चाहिए। खास कर द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद क्योंकि यह मनुष्य द्वारा मनुष्य के शोषण के चंगुल से मुक्ति का रास्ता निर्धारित करता है। इसलिए उन्होंने कहा था कि अब तक दुनिया की व्याख्या करने का दस्तूर रहा है, जरूरत दुनिया को बदलने की है।

(शेष अगले अंक में)

दिल्ली में हुए राष्ट्रीय कन्वेंशन का एलान

(पृष्ठ 1 का शेष)

राष्ट्रीय कन्वेंशन को सम्बोधित करते हुए कॉ. अरुण सिंह ने कहा कि सबसे पहले जो प्रस्ताव और मांग पत्र रखा गया है, जो बहुत ही सुविचारित है, इसका मैं अपने संगठन एआईकेकेएमएस की ओर से पूरा पूरा समर्थन करता हूँ। अभी केन्द्र में नरेंद्र मोदी-नीत जो यह मौजूदा बीजेपी सरकार है, यह सरकार आम जनता से झूठे वायदे करके, प्रचार तंत्र का इस्तेमाल करके, पैसे का सहारा लेकर सत्तासीन हुई है। सत्ता में आते ही यह हमलावर हो गई। इसने जनता पर ताबड़तोड़ हमले तेज कर दिए हैं। इसने चुनावों से पहले किसानों से वायदा किया था कि स्वामीनाथन आयोग की सिफारिश के मुताबिक उनकी फसल पर डेढ़ गुना दाम देंगे और किसानों के कर्ज माफ कर देंगे लेकिन आपने देखा इन वायदों को पूरा करना तो दूर रहा, इसके बजाय जब किसान इन मांगों को लेकर आंदोलन कर रहे थे, तो बीजेपी सरकार द्वारा उन पर गोलियाँ बरसाई गईं। मध्यप्रदेश के मंदसोर की घटना आपके सामने है। चुनावों से पहले उसने नौजवानों को सालाना 2 करोड़ रोजगार देने की बात कही थी, लेकिन सत्ता में आने के बाद सरकार रोजगार कहाँ दे रही है? रोजगार नहीं मिल रहा है, बल्कि इसके विपरीत रोजगार घट रहे हैं। देश में हालात ये हैं कि हर आधे घंटे में एक किसान आत्महत्या करने को मजबूर हो रहा है। अब आप देख रहे हैं कि देश में यह भय का वातावरण पैदा किया जा रहा है कि जो कोई भी सरकार की नीति का विरोध करेगा उसे राष्ट्रद्रोही कह दिया जाएगा और उन पर राष्ट्रद्रोह का इल्जाम लगाया जाएगा। चाहे वे जवाहरलाल नेहरू यूनिवर्सिटी, दिल्ली के छात्र हों या हैदराबाद यूनिवर्सिटी के छात्र हों जब वे सरकार की नीतियों का विरोध करते हैं, तो उन पर देशद्रोह का इल्जाम लगाया जाता है। किसान जब आंदोलन करते हैं, तो इनकी नजर में वे देशद्रोही हैं। नौजवान जब रोजगार की मांग करते हैं, तो उन्हें देशद्रोही करार दे दिया जाता है। जैसे कि देशहित और देशद्रोह का फैसला करने का अधिकार इनको ही मिल गया है। आजादी की लड़ाई में जिन्होंने हिस्सा नहीं लिया, आज वे अपने को सबसे बड़ा देशभक्त कहने वाले हो गए। आज एक ऐसा वातावरण पैदा किया जा रहा है कि हम क्या खाएंगे, क्या पहनेंगे, क्या बोलेंगे इसका फैसला वे करेंगे, वे डिक्टेट करेंगे। लोकतंत्र में यह अधिकार है कि हम सरकार की नीतियों का विरोध कर सकते हैं। यह लोकतंत्र की बुनियादी बात है। आज लोकतंत्र का हनन हो रहा है। देश एक बहुत ही खतरनाक स्थिति में चला गया है। यह जो एक साझा प्रयास चल रहा है जन एकता, जन अधिकार, जन प्रतिरोध –इस एकता को जनता के बीच, मजदूर-किसानों के बीच में ले जाना है। आज श्रम अधिकारों पर हमले हो रहे हैं। आजादी आंदोलन के समय और आजादी के बाद भी मजदूरों ने जो अधिकार लड़कर हासिल किए थे, वे एक के बाद एक छीने जा रहे हैं। महंगाई लगातार बढ़ रही है। इन सब के खिलाफ जगह-जगह छोटे-बड़े आंदोलन हो रहे हैं। इन तमाम आंदोलनों को एकजुट करने का जो फैसला इस कन्वेंशन ने लिया है इसका हम तहेदिल से समर्थन करते हैं। इसके अलावा एक बात और कहना चाहता हूँ, वह यह कि इस देश में लड़ाइयाँ कम नहीं हुई हैं, लोगों ने बार-बार खून बहाया है और बड़े-बड़े आंदोलन किए हैं। आन्दोलनों और लड़ाइयों के बाद सरकारों की अदला-बदली भी हुई है। केंद्र की सरकारें बदली हैं। राज्यों में सरकारें बदली हैं। लेकिन आम जनता ने जिन सवालों को लेकर संघर्ष किया, वे सवाल आज भी हल नहीं हुए हैं। महंगाई-बेरोजगारी के खिलाफ, भ्रष्टाचार के खिलाफ, शिक्षा में आमूल-चूल परिवर्तन के लिए जोरदार आंदोलन हुए। सरकारें बदल गई लेकिन इन समस्याओं का समाधान नहीं हुआ। सरकारों के बदलने से समस्याओं का समाधान नहीं हो रहा है। इसलिए आप यह जो ग्रास रूट लेवल से संघर्ष का हथियार, आंदोलन का हथियार तैयार कर रहे हैं, इसे आप अक्षुण्ण बनाए रखें। क्योंकि सरकारें बदल रही है लेकिन नीतियां नहीं बदल रही हैं। आर्थिक नीति देश में वही रहती है। औद्योगिक नीति, शिक्षा नीति, स्वास्थ्य नीति, कृषि नीति में कोई बदलाव नहीं हो रहा है। ये नीतियाँ किसी खास पार्टी की सरकार की नहीं, बल्कि ये हैं पूंजीपतिपरस्त, कॉर्पोरेटपरस्त नीतियां। इसलिए हम संघर्ष के हथियार को इस तरह निर्मित करें कि सरकारें अगर बदल भी जाएं और हमारी समस्याओं के समाधान ना करें, तो हमारा यह मंच अक्षुण्ण रहे, संघर्ष लगातार जारी रहे, सरकार चाहे जो भी हो, हमारा संघर्ष आगे बढ़ता रहे। क्योंकि संघर्ष की बदौलत ही हम अपने अधिकारों की रक्षा कर सकते हैं, छीने गए अधिकारों को वापस ले सकते हैं और अपनी मांगें हासिल कर सकते हैं। इसी तरह से आप संघर्ष को आगे बढ़ाएंगे–इसी आशा और विश्वास के साथ मैं अपनी बात समाप्त करता हूँ। इंकलाब जिंदाबाद!

8 R.N.I. No.- 43022/85
P.R.No.-DL(C)-01/1123/2015-2017
Posting at New Delhi PSO on 7–8 and 22–23 Fortnightly , Date of Publication : September 20, 2017

सर्वहारा दृष्टिकोण

22 सितम्बर से 6 अक्तूबर, 2017

गौरी लंकेश की क्रूर हत्या की एसयूसीआई(सी) ने की घोर निन्दा

सोशलिस्ट यूनिटी सेण्टर ऑफ इण्डिया(कम्युनिस्ट) के महासचिव कॉमरेड प्रभास घोष ने 6 सितम्बर को यह बयान जारी किया :

हमें प्रसिद्ध वरिष्ठ पत्रकार और संपादक गौरी लंकेश की ठंडे दिमाग से की गई हत्या के बारे में सुन कर गहरा दुख हुआ, जिन्हें कल बंगलुरू में अपने घर के बाहर गोली मार दी गई थी।

हम गौरी लंकेश की घृणित हत्या की निंदा करते हैं। हम मानते हैं कि साम्प्रदायिकता और हिंदुत्व की राजनीति की आलोचना करने में उनके तेज लेखन, बोल्ड विचारों और मुखरता के कारण उनकी क्रूरता से हत्या कर दी गई थी। उनकी क्रूर हत्या से पता चलता है कि देश में स्थिति कितनी खतरनाक है।

हम राज्य और केंद्र दोनों सरकारों से मांग करते हैं कि वे इस भयानक हत्या की तुरंत जांच करें, दोषियों को गिरफ्तार करें और उन्हें अनुकरणीय सजा दें। हम इस घृणित राजनीति के खिलाफ देशव्यापी विरोध आन्दोलन छेड़ने के लिए सभी तबकों के लोगों का आह्वान करते हैं।

बंगलुरु में आशा कार्यकर्ता का विशाल प्रदर्शन

बंगलुरु : अपनी मांगों को लेकर सड़कों पर उतरी हजारों आशा कार्यकर्ता

बंगलौर (कर्नाटक) : 7 सितम्बर को यहां आशा कार्यकर्ताओं का विशाल जुलूस निकला। फ्रीडम पार्क की ओर जाने वाला फ्लाईओवर एक गुलाबी नदी सा दिखाई दे रहा था। इस नजारे को देख कर बंगलुरु वासियों सहित पूरे कर्नाटक के लोग दंग रह गए। अखिल भारतीय यूनाईटेड ट्रेड यूनियन सेंटर (एआईयूटीयूसी) से संबद्ध कर्नाटक राज्य संयुक्त आशा वर्कर्स यूनियन के तत्वावधान में पूरे राज्य भर से हजारों आशा कार्यकर्ता (समेकित सामाजिक स्वास्थ्य कार्यकर्ता) बंगलुरु की सड़कों पर उतरी। एक अदम्य साहस और जुझारू जज्बे के साथ वे बैंगलोर सिटी रेलवे स्टेशन से फ्रीडम पार्क तक पहुंची। राज्य में आशा कार्यकर्ता अपनी सेवा शर्तों में सुधार, स्थायी नौकरी और पिछले 9 वर्षों का बकाया पारिश्रमिक देने की लड़ाई जारी रखे हुए हैं। समेकित सामाजिक स्वास्थ्य कार्यकर्ता-आशा ग्रामीण इलाकों और शहरी गरीबों के बीच में निरंतर काम कर रही हैं। उन्हीं की वजह से मातृ मृत्यु दर और बाल मृत्यु दर में काफी कमी आई है। लेकिन इन श्रमिकों को नियमित मासिक वेतनमान नहीं मिलता है; उन्हें योजना कार्यकर्ता के रूप में नामित किया जाता है, जिसके कारण वे ईएसआई, पीएफ, आदि जैसे मजदूरों को मिलने वाले अन्य हितलाभों से भी वंचित हैं। दिन-रात के अनिश्चितकालीन धरने के हिस्से के रूप में दूसरे दिन यानी 8 सितम्बर को बंगलुरु की वर्षा की परवाह न करते हुए, शिशुओं और बच्चों के साथ ठिठुरती हुई आशा कार्यकता फ्रीडम पार्क में धरने पर अडिग रही। फ्रीडम पार्क में संघर्ष का वह ज़ज्बा दिखाई दे रहा था, जो न्यायसंगत मांगों के समर्थन में लगाए जा रहे जोशीले नारों में उभरा था।

कार्यक्रम प्रसिद्ध पत्रकार और सामाजिक कार्यकर्ता श्रीमती गौरी लंकेश की हत्या की निंदा करते हुए शुरू हुआ। कर्नाटक राज्य आशा श्रमिक यूनियन ने इस हमले की निंदा करते हुए एक संकल्प लिया और मांग की कि राज्य सरकार को अपराधियों को पकड़ने व उन्हें सजा देने के अपने प्रयासों को तेज करना चाहिए।

प्रदर्शनकारियों को सम्बोधि करते हुए एसयूसीआई (सी) के केन्द्रीय कमेटी सदस्य सह कर्नाटक राज्य सचिव और साथ ही एआईयूटीयूसी के राज्य अध्यक्ष कॉमरेड के. राधाकृष्ण ने कहा कि आये दिन आशा कार्यकर्ताओं की हालत बद से बदतर होती जा रही है। सतत, दृढ़संकल्पित आन्दोलन के ज़ज्बे की सराहना करते हुए उन्होंने कहा कि राज्य और केन्द्र दोनों सरकारें बहुत सी मजदूर-विरोधी नीतियां ला रही हैं जिन्हें सही विचारधारा और उच्च संस्कृति पर आधारित जोरदार आन्दोलनों का दबाव पैदा करके रोकने की जरूरत है। एसयूसीआई(सी) और एआईयूटीयूसी शुरूआत से ही आशा आन्दोलन के साथ रहे हैं और हमेशा संघर्षशील आशा कार्यकर्ताओं के साथ खड़े रहेंगे। न्याय के लिए संघर्ष और मुनासिब राजनैतिक प्रशिक्षण एक नई सभ्यता का आगाज करेगा जो जनमुखी होगी।

आन्दोलन के दबाव में कर्नाटक सरकार यह एलान करने को मजबूर हुई कि रु. 3500/- फिक्स मासिक मेहनताना और बढ़ा हुआ परफोरमेंस-आधारित इन्सेन्टिव दिया जाएगा। इसके अलावा मकान सुविधा, मुफ्त या रियायती बस पास, स्त्री शक्ति समूह बना कर 2 लाख रुपये तक का ब्याजरहित कर्ज मुहैया कराना इत्यादि दिया जाएगा। हालांकि आशा कार्यकर्ताओं को जो मिला है, वह जरूरत और आवश्यक वस्तुओं की मौजूदा महंगाई के मुकाबले यह बढोतरी मामूली सी है, फिर भी सभी खुश थी कि दृढ़संकल्पित आन्दोलन इस ढीठ सरकार को कम से कम इस हद तो झुका सका। हर कोई इस ऐतिहासिक आन्दोलन का गवाह बना जिसने एक अच्छी खासी जीत हासिल की है। इस आन्दोलन ने नई उम्मीद जगा दी और राज्य में मजदूरों के आन्दोलनों के इतिहास में एक नये युग का सूत्रपात किया है और शायद देश में भी एक निराले आन्दोलन की मिसाल के रूप में देखा जाएगा।

प्रदर्शनकारियों को कॉमरेड के. उमा (स्टेट कमेटी सदस्य, एसयूसीआई (सी), श्रीमती रूपा हसन (प्रसिद्ध साहित्यिक और सामाजिक कार्यकर्ता), डॉ. सुधा कामथ (राज्य अध्यक्ष, मेडिकल सर्विस सेंटर), कॉमरेड अपर्णा, आर.आर. (राज्य अध्यक्ष, एआईएमएसएस), श्रीमती डी. नागलक्ष्मी (राज्य सचिव, कर्नाटक राज्य आशा श्रमिक यूनियन), श्री के. सोमशेखर यादगीर (राज्य अध्यक्ष, कर्नाटक राज्य उम्मीदवार संघ), कॉमरेड के. सोमशेखर (राज्य सचिव, एआईयूटीयूसी), कॉमरेड एम. एन. श्रीराम (राज्य उपाध्यक्ष, एआईयूटीयूसी), कॉमरेड शशिधर एम. (राज्य उपाध्यक्ष, एआईयूटीयूसी), डॉ वसुंधरा भूपति और जिलों की विभिन्न आशा नेताओं सहित अन्य कई वक्ताओं ने भी सम्बोधित किया।

रोहिंग्या लोगों पर अमानवीय यातना की एसयूसीआई (सी) ने की निंदा

यातनाएं तत्काल रोकने और पड़ोसी देशों में शरण से उन्हें दूर खदड़ने के अमानवीय कदम को रोकने का किया आह्वान

एसयूसीआई (सी) के महासचिव कॉमरेड प्रभास घोष ने 11 सितम्बर को निम्नलिखित बयान जारी किया है: -

हम अत्यधिक क्रूर हमले की निंदा करते हैं जोकि म्यांमार सरकार उस देश के पहाड़ी राज्य राखीने में स्थित रोहिंग्या समुदाय पर सेना की मदद से कर रही है। जाहिर है, म्यांमार सरकार की यह क्रूरता और बर्बरता जिसे 'मानवता के खिलाफ अपराध' कहा जा सकता है, इन वंशमूलीय अल्पसंख्यक लोगों के खिलाफ उसकी नस्लीय नफरत से प्रेरित है। जिंदगी बचाने के लिए, सताए हुए और अत्याचारित रोहिंग्या को अपने घर से भागने और पड़ोसी बांग्लादेश, भारत और अन्य देशों में शरण लेने के लिए मजबूर किया गया है।

हम इस बर्बरता को तत्काल रोकने, बेदखल रोहिंग्या लोगों की सुरक्षित स्वदेश वापसी सुनिश्चित करने के कारगर बंदोबस्त करने और उनकी सुरक्षा और सुरक्षा की गारंटी देने की मांग करते हैं। हम यह भी दृढ़ता से कहना चाहते हैं कि भारत और अन्य देशों से इन बदहाल और लाचार लोगों को दूर खदेड़ने का विचार ही एक असभ्य और अमानवीय विचार है। ऐसे विचारों को त्याग दिया जाना चाहिए और उन्हें बाहर निकालने का प्रयास तुरंत बंद हो जाना चाहिए।

Printed and published by Com. Satyawan on behalf of the Central Committee of the Socialist Unity Centre of India (Communist) and printed at M/s Balaji Offset Printers, 315/21, Shahzada Bagh, Daya Basti, Delhi and published at 3A/38, WEA, Satnagar, Karol Bagh, New Delhi-110005. Editor: Com. Satyawan, Member, Central Committee, SUCI(C)."

Email: sarvaharadrishtikon@gmail.com , sarvaharadrishtikon@yahoo.com फोन नं. : 011-25726631, 9868350503